

न्यूज़ ट्रैफ़ नेटवर्क



वर्ष : प्रथम

अंक : 18

मूल्य : ₹ 5

दिनांक 1 मार्च, 2011

पृष्ठ संख्या : 16

सब पर नज़र, सब की खबर

बाबू जैहाद

- भोपाल में हो रहा है सुनियोजित षड्यंत्र
- भावात्मक लगाव के बाद धर्मात्मक
- धर्मात्मक के बाद शोषण



विस्तृत रिपोर्ट पेज - 3 पर

मेनन ने बताया आरोपों को सत्य से परे

- बनारस की महिला ने लगाया था यौन शोषण का आरोप
- पुलिस में जाने की बजाय राष्ट्रीय अध्यक्ष से की शिकायत
- विरोधियों की रणनीति असफल

विस्तृत समाचार पेज-16 पर

उमा का नया दंत

विस्तृत समाचार पेज 8-9 पर

43 फीसदी की दर से बढ़ रहे हैं बिजली चोर

- टॉप टेन बिजली चोर शहरों में इंदौर नंबर वन
- कृषि उपयोग में चोरी करने वालों की तादाद मंदसौर में ज्यादा

विस्तृत समाचार पेज-5 पर

संपादकीय

जनाब काम बदलिए

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल का नाम अब राजा भोज की नगरी भोजपाल के नाम पर करने की कवायद शुरू हो गई है। भारत के इतिहास में यह पहला मौका नहीं जब किसी शहर का नाम बदला जा रहा हो। बंबई से मुंबई और मद्रास से वैन्ड्री या फिर बैंगलोर से बैंगलुरु हो, नाम बदलने के बाद भी हालात नहीं बदल पाए हैं। महज सांस्कृतिक और राष्ट्रीय धरोहर बचाए रखने के लिए नाम बदलने का प्रयास आम आदमी की नजर में एक मजाक भर बनकर रह गया है।



इन शहरों के नाम बदलने के बाद न यहाँ की कार्य संस्कृति बदली और न ही यहाँ के लोगों के रहने के तौर-तरीकों में बदलाव आया है। अब बारी भोपाल की है, लोगों की मनोस्थितियाँ बदलने का प्रयास किया जा रहा है, लोगों को समझाया जा रहा है कि शहर का नाम बदला जाना जरूरी है। यह कवायद उस समय हुई जब राजा भोज की प्रतिमा का अनावरण किया जा रहा था और राज्यारोहण समारोह मनाया जा रहा था। कार्यक्रम के आयोजकों ने न तो राजा भोज से कोई सीख ली और न ही उनके कार्यक्रम में कोई ऐसा कार्य करके दिखाया जिससे प्रतीत होता कि राजा भोज को सच्चे मन से याद किया जा रहा है। राज्यारोहण के नाम पर फिजूलखर्ची की गई। जिसे देखने के बाद भोपाल के अधिकांश लोगों का मत था कि भोपाल का नाम मत बदलिए जनाब, अपने-अपने काम करने के तरीके बदल लीजिए।

जीवन-दर्शन

मनुष्य की पहचान

यह उस समय की बात है, जब कबीर दास की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैलने लगी थी। लोग बड़ी संख्या में उनसे मिलने आते थे। एक दिन जब वह कपड़ा बुन रहे थे, उनके पास कई सेठ आए और बोले, अब आप साधारण व्यक्ति नहीं रहे। जब साधारण व्यक्ति थे तब तो आपका कपड़ा बुनना ठीक था। पर अब आप की चर्चा संत के रूप में होती है। आप को फटे-पुराने कपड़े पहने हुए देख हमें शर्म महसूस होती है। फिर आप को अपने हाथ से कपड़ा बुनने की आवश्यकता ही क्या है। अब हम लोग आप की हर जरूरत को पूरा करेंगे। आप के लिए एक भव्य आत्रम बना देंगे।

कबीर ने कहा, आप लोगों को देख कर मुझे शर्म आती है। पहले मैं अपने लिए कपड़ा बुनता था, मगर अब गरीब लोगों के लिए बुनता हूँ। मेरी देखादेखी और लोग भी यह काम करेंगे। मनुष्य को अपनी पहचान नहीं खोनी चाहिए। आज आप उस समय हमारी मदद करने आए हैं जब मुझे आपकी सहायता की जरूरत नहीं है। आप उनकी सहायता करें जिन्हें आपकी जरूरत है। आप देखते होंगे कि काशी के घाट पर कितने लोग भूखे सोते हैं। उन्हें देख कर आप को शर्म महसूस नहीं होती होगी। क्योंकि आप हमारी मदद करने नहीं अपना प्रचार पाने के लिए यहाँ आए हैं। यह सुन कर सभी सेठ शर्मिदा हो गए और उन्होंने मापी मांगी। उन्होंने चर्चन दिया कि वे हर रोज काशी के घाट पर गरीबों को खाना खिलाएं। तब से शुरू हुई वह परंपरा काशी में आज भी जारी है। संकलन : सुरेश सिंह

मुद्दा

देश से पहले अपना घर सुधार ले धर्मगुरु

जब धर्मगुरु राजनीति की ओर आने की बात करते हैं, तो उनका सबसे बड़ा संदेश भ्रष्टाचार विरोध और नैतिकता का होता है। वे कहते हैं कि मौजूदा राजनीति की मुख्य समस्या भ्रष्टाचार है और वे उसे दूर करेंगे। यह बहुत अच्छा कार्य है परं वर्त्यों न इसकी शुरूआत स्वयं धर्मगुरुओं के नाम पर ही हो रहे तरह-तरह के भ्रष्टाचार को दूर करके की जाए? पहले अपने आंगन को बुहार लिया जाए, फिर व्यापक स्वच्छता अभियान छेड़ा जाए।

■ भारत डोंगरा

हाल में हमारे देश में अनेक धर्मगुरुओं का उभार हुआ है। उनके प्रशंसकों की संख्या अब करोड़ों में है। इससे उत्साहित होकर उनमें से कुछ अब राजनीति की ओर भी अग्रसर हो रहे हैं। यदि वे चंद्रगुप्त की भूमिका न भी निभाएं तो चाणक्य बनने की इच्छा जरूर है। अतः अब यह और जरूरी हो गया है कि धर्मगुरुओं की भूमिका पर संतुलित बहस हो।

धर्मगुरुओं के उभार का एक अच्छा असर यह देखा गया है कि बहुत से लोगों को इससे नशामुक्ति की प्रेरणा मिली है। इससे भी बड़ी संख्या में लोग स्वास्थ्य रक्षा के कुछ बुनियादी नियमों के प्रति सचेत हुए हैं। ऐसा नहीं है कि इन नियमों की पहले जानकारी नहीं थी, पर इनकी उपेक्षा हो रही थी। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य व जड़ी-बूटियों संबंधी बहुत से अमूल्य परंपरागत ज्ञान को भी उन्होंने करोड़ों लोगों तक पहुंचाया है।

योग और रोग

दूसरी ओर कुछ लोगों का मानना है कि कुछ धर्मगुरुओं के स्वास्थ्य संबंधी प्रचार में विसंगतियाँ भी हैं। योगासन के विद्वानों ने समय-समय पर कहा है कि कौन सा आसन किस व्यक्ति को करना है, किसे नहीं करना है, इस पर बहुत ध्यान देने की जरूरत होती है। यह भी देखना पड़ता है कि योगासन टीके से किया जा रहा है या नहीं। ऐसा न होने पर लाभ के स्थान पर हानि हो सकती है।

अतः ये विद्वान कहते हैं कि लाखों लोगों को टीकी के माध्यम से योगासन सिखाने पर कई लोगों को स्वास्थ्य लाभ हुआ है तो कई अन्य लोगों के लिए स्वास्थ्य समस्याएं भी उत्पन्न हो सकती हैं।

प्रचार के टोक्टे

धर्मगुरुओं के स्वास्थ्य संबंधी प्रचार-प्रसार से एक अन्य समस्या यह उत्पन्न हुई है कि कई गंभीर बीमारियों से त्रस्त लोग समय पर अस्पतालों में जरूरी एलोपैथिक इलाज नहीं करवा रहे हैं। हाल में धर्मगुरुओं से जुड़े हुए एक विचारात् व प्रतिभाशाली सामाजिक कार्यकर्ता की मृत्यु भी काफी हृदय तक इस कारण हुई। आधुनिक एलोपैथिक चिकित्सा में कई गंभीर विसंगतियाँ हैं तो इसकी कई महान उपलब्धियाँ भी हैं। जस्तर एक संतुलित दृष्टिकोण की है, पर धर्मगुरुओं का अपने विचारों संबंधी अतिशयोक्तिपूर्ण प्रचार कई बार इस संतुलन को बिगाढ़ देता है और लोग भ्रमित हो जाते हैं।

इतना ही नहीं, कुछ धर्मगुरुओं ने अपने अनुयायियों की संख्या भी लिया है, हालांकि छोटे-मोटे जादूगर भी यह बता देते हैं कि ये चमत्कार वास्तव में हाथ की सफाई भर होते हैं। अंधविश्वासों व अंधभक्ति का सहारा लेकर लोकप्रियता प्राप्त करना अनुचित है। जो धर्मगुरु स्वयं इस राह को नहीं अपनाते हैं, वे भी अपने साथी धर्मगुरुओं के इस तरह के पाखंडों का पर्दाफाश करने का प्रयास नहीं करते।

कई कथित धर्मगुरुओं पर अपराधिक गतिविधियों के आरोप भी लगते रहे हैं। जमीन हड्डपने और अवैध संपत्ति अर्जित करने के ही नहीं, हत्या और यौन शोषण के आरोप भी उनपर लगते रहे हैं। हैरानी की बात है कि इसके

बावजूद ऐसे धर्मगुरुओं के पास भी लाखों लोग अंधभक्ति के साथ जाते हैं। इस तरह के लाखों अंधभक्त आज मौजूद हैं जिनसे तार्किं बहस करना लगभग असंभव है। जो धर्मगुरु अपराधों के आरोप से मुक्त हैं वे भी अपने संस्थानों के लिए तेजी से संपत्ति व भूमि जमा करने की प्रवृत्ति से मुक्त नहीं हो सकते हैं।

इस संबंध में पारदर्शिता भी प्रायः उन्होंने नहीं अपनाई है। अब चूंकि ये धर्मगुरु राजनीति में असरदार भूमिका भी निभाना चाहते हैं अतः उनकी पारदर्शिता की जरूरत और बढ़ गई है। लोकतंत्र में कोई भी व्यक्ति राजनीतिक नेतृत्व की महत्वाकांक्षा रखने व राजनीतिक दल का गठन करने के लिए स्वतंत्र है। बहस केवल इस बात पर है कि धर्मगुरुओं और राजनीति का गठबंधन देश के हितों के अनुकूल है या नहीं।

दूसरा सवाल यह है कि कहीं इस गठबंधन से कुछ संवेदनानिक सिद्धांतों, जैसे धर्म-निरपेक्षता का उल्लंघन होने का खतरा तो नहीं है। जब धर्मगुरु राजनीति की मुख्य समस्या भ्रष्टाचार है और वे उसे दूर करेंगे। यह बहुत अच्छा कार्य है परं वर्त्यों न इसकी शुरूआत स्वयं धर्मगुरुओं के नाम पर ही हो रहे तरह-तरह के भ्रष्टाचार को दूर करके की जाए? पहले अपने आंगन को बुहार लिया जाए, फिर व्यापक स्वच्छता अभियान छेड़ा जाए।

इस तरह की सार्थक पहल न कर प्रायः धर्मगुरु पूरे देश को अपनी नैतिक शक्ति के बल पर सुधारने का दावा करते हैं। वे जो कार्यक्रम लोगों के समने रखते हैं वे अति सरलीकृत लोक-लुभावने कार्यक्रम होते हैं। वे लोगों को बड़े पैमाने पर एकत्र कर सकते हैं और ताली बजवा सकते हैं, पर ऐसे कार्यक्रमों की देश व दुनिया को बदलने की क्षमता प्रायः बहुत सीमित होती है।

राजनीति में धर्म

इसके बावजूद अपनी लोकप्रियता के बल पर कुछ धर्मगुरु भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण हलचल पैदा कर सकते हैं। गठबंधनों के दौर में कुछ सीटें जीतकर सत्ता के संघर्ष का संतुलन भी बदला जा सकता है। जहाँ धर्मगुरुओं के अनुयायी अधिक संख्या में हैं, उन क्षेत्रों में वे स्वयं जीतें या न जीतें पर वहाँ के परिणाम को प्रभावित तो कही ही सकते हैं। उनका यह केवल संतुलित धर्मगुरुओं ने संवयं संप्रदायिक विचार प्रकट करने से परहेज किया है, पर उनकी विचारधारा अंत में उन्हें संप्रदायिक व कट्टरवादी तात्कालिक छोड़ देती है। यह ऐसी प्रवृत्ति है जो भारतीय संविधान में गहरी आस्था रखने वाले नारायणों के लिए चिंता का विषय है। एक और चिंता का विषय यह है कि अंधविश्वास व अंधभक्ति के आधार पर बोट बैंक के बावजूद जाएं। इन सब संभावनाओं पर संतुलित बहस होनी चाहिए ताकि धर्मगुरुओं के लिए सार्थक भूमिका की सही पहचान हो सके।

अगर संसार में तीन करोड़ ईसा, मुहम्मद, बुद्ध या राम जन्म लें तो भी तुम्हारा उद्धार नहीं हो सकता जब तक तुम स्वयं अपने अज्ञान को दूर करने के लिए कटिवद्ध नहीं होते, तब तक तुम्हारा कोई उद्धार नहीं कर सकता, इसलिए दूसरों का भरोसा मत करो। -स्वामी रामतीर्थ





लव जैहाद



- भोपाल में हो रहा है सुनियोजित घड़यंत्र
- भावात्मक लगाव के बाद धर्मातरण
- धर्मातरण के बाद शोषण

गौरव चतुर्वेदी / न्यूज ट्रेक नेटवर्क

भोपाल। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल इन दिनों अनोखे बुखार में फंसी हुई है। मोहब्बत के नाम पर संभात घरानों की महिलाओं और लड़कियों के साथ नाजायज संबंध बनाए जाते हैं और उसके बाद उन्हें ब्लैकमेल भी किया जा रहा है। एक वर्ग विशेष द्वारा सोची-समझी रणनीति के तहत किए जा रहे इस कृत्य को 'लव जैहाद' कहा जा सकता है।

राजधानी के कई पाँश इलाकों में शाम के समय बन-संवरकर युवाओं को हुजूम आता है और फिर तफरीह पर निकली महिलाओं को प्रेम जाल में फांसने का काम किया जाता है। कई इलाकों में तो ये युवक ऐसे समय दस्तक देते हैं जब इन महिलाओं के घर में कोई पुरुष नहीं होता है। हाथ से हालात निकलने के बाद इन संभात परिवारों के बड़े-बुजुर्ग पुलिस को शिकायत तो करते हैं, लेकिन उरी तौर पर ही। इजत बचाने के डर से मामले को रफादफा भी कर देते हैं। कई पीड़ित पक्ष के लोगों ने बताया कि कई बार उनकी आंखों के सामने उनके परिवार की महिलाओं को बिगड़े छोरे अपने साथ बिठाकर ले गए, लेकिन उन्हें इस बात का पता भी नहीं लग पाया। इन बिगड़े छोरों के निशाने पर बैराग़, अरेरा कालोनी, शाहपुरा झील और 4 इमली जैसे इलाके हैं। वजह इस

दौरान महिलाओं के चेहरे कपड़ों से ढंके रहना बताए गए। कई इलाकों में तो सार्वजनिक स्थल पर महिलाओं को बुर्का पहनते हुए भी इन लड़कों के साथ जाते हुए देखा गया। अनेक धार्मिक संगठनों ने इस संवाददाता को बताया कि आज की तरीख में हिंदूओं के धर्मस्थल भी सुरक्षित नहीं हैं। दर्शनार्थी की लाइन में अन्य धर्म के लड़के अनें हाथों में कलावा पहनकर खड़े हो जाते हैं और फिर महिलाओं के साथ संबंध स्थापित करने की कोशिश करते हैं। सामान्य तरीके से महिला के फंसने के बाद ये लोग आर्य समाज के मंदिर में जाकर शादी भी कर लेते हैं। नाम मात्र के लिए यहां पर गंगा जल पिलाकर धर्म शुद्ध कराया जाता है और वे हिंदूओं का धर्म ग्रहण कर लेते हैं। इसके कुछ दिन बाद ही वे वापस अपने धर्म में लौट जाते हैं। विवाहित महिला की मजबूरी उसका धर्म कबूल करना बन जाती है। इसी के साथ ही इस तह के तत्व 10 रु. के स्टाप्प पेपर पर भी हिंदू धर्म कबूल कर लेते हैं, जिसकी कोई अहमियत नहीं होती है।

सूत्रों के अनुसार बताया जा रहा है कि ऐसे तत्वों को एक वर्ग विशेष के लोग आर्थिक मदद भी कर रहे हैं। गौरतलब है कि ऐसे मामलों के संज्ञन में आने के बाद केरल और इलाहाबाद की हाईकोर्ट ने वहां के प्रशासन को जांच करने के भी निर्देश दिए थे।

इनका कहना है



■ अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पूर्व प्रदेश मंत्री रजनीश अश्वाल का कहना है कि यदि जब 'तव' (प्यार) नहीं पड़ूयत्र हो, एक धर्म की लड़कियां दुलक्ष बनें, कथित शादी के बाद लड़की एक विशेष धर्म में धर्मातिरित हो, कुछ समय बाद लड़की का जीवन संकट व संघर्ष में आ जाए और ऐसी संख्या बढ़ी हो तो भारत के शासन व समाज की चिंता होना रवाभाविक है। बल्कि एक गंभीर पहल की भी जरूरत है।

शरणागत सरकार

- जिला प्रशासन भी शरण में
- रावतपुरा सरकार के खिलाफ कोर्ट जाएंगे गोविंद सिंह

ब्यूरो / न्यूज ट्रेक नेटवर्क

भोपाल। विगत 10 वर्षों से श्री रविशंकर जी महाराज,

रावतपुरा सरकार के खिलाफ मोर्चा ताने का ग्रेस विधायक गोविंद सिंह ने मध्यप्रदेश सरकार सहित जिला प्रशासन को शरणागत होने का आरोप लगाया है। तीखे लहजे में वे यह कहने से नहीं चूके कि जिन नेताओं की आत्मा मर चुकी है वे भी पाखण्डी संत की शरण में हैं।

गौरतलब है कि उनका इशारा अपनी ही पार्टी के उन आला नेताओं की तरफ भी है जो नियमित रूप से रावतपुरा महाराज की चरण वंदना करते हैं। हालिया मामला विधानसभा में सरकार द्वारा दिए गए एक जवाब का है जिसमें सरकार ने स्वीकारा है कि सांसद निधि से भिंड

जिले की लहार तहसील के ग्राम बिजौरा टोला मजरा रावतपुरा में वर्ष 2006-07 में सांसद निधि से 4, 58, 500 रुपए खर्च कर

पूर्व माध्यमिक विद्यालय भवन का निर्माण कराया गया था। सरकार ने स्वीकारा है कि इस भवन में पूर्व माध्यमिक क्रियालय

संचालित नहीं किया जा रहा है। गोविंद सिंह का

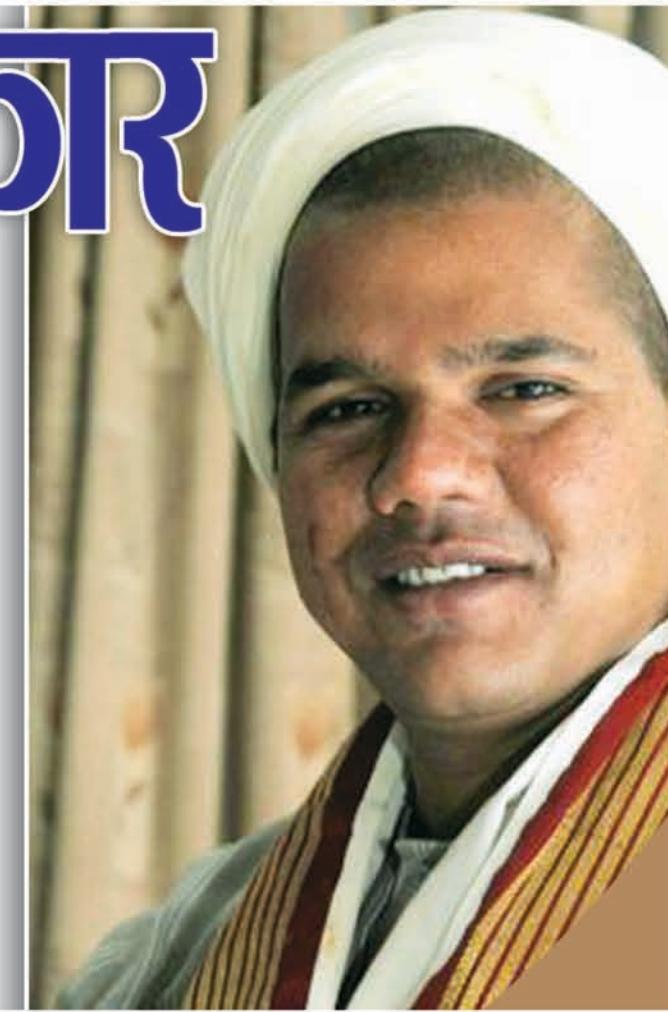
आरोप है कि मध्यप्रदेश सरकार और उसके मंत्री

अपनी राजनैतिक हैसियत बचाने के फेर में

रावतपुरा महाराज की शरण में हैं।

श्री सिंह बताते हैं कि विगत 10 वर्षों में लगभग 2 करोड़ रुपए के काम विभिन्न राज्यसभा एवं लोकसभा सदस्यों ने अपनी सांसद निधि से करवाए हैं। इस पैसे से निर्मित भवनों का राखरखाव रावतपुरा महाराज कर रहे हैं और वे वहां आने वाले अपने भक्तों से इसकी कीमत भी बसूलते हैं।

श्री सिंह का आरोप है कि रावतपुरा महाराज ने अपने स्सख के चलते विभिन्न शासकीय विभागों की कई योजनाओं का लगभग 50 करोड़ रुपया अपने आश्रम पर खर्च करवा लिया है और वे इसका कोई हिसाब भी नहीं देते हैं। सांसद निधि से जिन सांसदों ने अपनी राशि दी है उनमें डॉ. रामलखन सिंह, बालकिंवि बैरागी, कैलाश जोशी, स्व. प्यारेलाल खण्डेलवाल, प्रभात झा और नारायण सिंह के सभी सहित सुरेश पचौरी भी शामिल हैं।



हवाई यात्रा पर दो साल में 20 करोड़ रुपये

वीरेंद्र गुप्ता / न्यूज ट्रेक नेटवर्क

भोपाल। जिस राज्य में किसान आत्महत्याएं कर रहे हैं वहाँ मुख्यमंत्री और उनके मंत्री शौकिया तौर पर हवाई यात्राओं पर करोड़ों रुपए फूंक डाले तो इसे क्या कहेंगे? यह कहना है, कांग्रेस के विधायक पुरुषोत्तम दांगी का। उन्होंने जब प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और उनके गणों द्वारा की गई हवाई यात्राओं का ब्लौरा सरकार से मांगा तो उसके आंकड़े काफी चौंकाने वाले थे।

आंकड़े बताते हैं कि

प्रदेश के मुखिया ने अप्रैल 2009 से फरवरी

2011 तक लगभग 19 करोड़ रुपए की यात्राएं की हैं। जिसमें

सरकारी विमान से 75,91,321 रुपए और गैर सरकारी विमान से

की गई हवाई यात्राओं पर 4 करोड़ 79 लाख 77,516 रुपए फूंके गए। इस पर एक बार की यात्रा में करीब 1 लाख 49 हजार 781 रुपए 23 पैसे गैर सरकारी विमान पर और 39 हजार 157 रुपए 25 पैसे सरकारी विमान पर खर्च किए गए। कांग्रेस विधायक ने सदन में दिए गए इन आंकड़ों को गलत तो नहीं बताया लेकिन यह जरूर कहा कि इन पर विश्वास नहीं होता। खर्च इससे भी कहीं अधिक हुआ है।

कांग्रेस विधायक पुरुषोत्तम दांगी का मत है कि सरकार को बजाए फिजूल खर्चों के जनता के हित में काम करना चाहिए। सरकार महज मन बहलाने के लिए हवाई यात्रा करने पर आमदा है। उन्होंने इस हवाई यात्राओं पर औचित्य का सवाल उठाते हुए कहा कि जहाँ किसान आत्महत्या कर रहे हैं वहाँ सरकार हवा में उड़े यह कहा तक न्याय संगत है। इन यात्राओं से जनता को कोई बड़ा लाभ हुआ हो यह भी नहीं कहा जा सकता। इसके साथ ही पूर्व मुख्यमंत्री सुरदलाल पटवा ने भी मौके का लाभ उठाते हुए सरकारी हेलीकॉप्टर बीटी-एमपीएस 430 से तीन बार हवाई यात्राएं की हैं, जिस पर करीब 74 हजार 250 रुपए का खर्च सरकार ने उठाया। इन यात्राओं पर सबसे अधिक नई दिल्ली की सारी एयरवेज

प्रा.लि. कंपनी से किए गए विमान लेकर 2 करोड़ 57 लाख 6472 रुपए खर्च किए गए, जबकि सबसे कम दिल्ली की ही एयर चार्टर सर्विसेज प्रा.लि. को हवाई यात्राओं के लिए 2 लाख 70235 रुपए का भुगतान किया गया। इसके अतिरिक्त नई दिल्ली की ग्लोबल वेक्ट्रा हेलीकॉर्प लिमिटेड को 1 करोड़ 37 लाख 30605, सेन एयर प्रा.लि. नई दिल्ली को 39 लाख 46 हजार 745 रुपए, भोपाल की ओएसएस प्रा.लि. 50 लाख 75179 रुपए, एसआरसी एविएशन प्रा.लि. नई दिल्ली को 20 लाख 28682 रुपए, सुमित एवीएशन प्रा.लि. नई दिल्ली को 17 लाख 72154 रुपए, स्वेंज एयर चार्टर लिमिटेड चेन्नई को 5 लाख 4623 रुपए तथा इसी तह आरबिट एवीएशन प्रा.लि. नई दिल्ली को 5 लाख 55176 रुपए तथा नई दिल्ली की ही सार एविएशन प्रा.लि. को 3 लाख 30 हजार 900 रुपए का भुगतान किया गया है।

पुरुषोत्तम दांगी ने यात्राओं पर फिजूल खर्चों का आरोप लगाते हुए कहा कि यह तो महज राज्य के अंदर की गई हवाई यात्रा का ब्लौरा है। इसके अतिरिक्त राज्य के बाहर भी करोड़ों रुपए हवाई यात्राओं पर व्यय किए गए हैं। इतना ही नहीं अभी तो रेल मार्ग और सड़क मार्ग से की गई यात्राओं का ब्लौरा बाकी है। जिस पर भी करोड़ों रुपए फूंके गए हैं। उन्होंने कहा कि प्रतिदिन करीब 2 लाख रुपए मुख्यमंत्री की यात्राओं पर खर्च किए जा रहे हैं। दांगी ने कहा कि हवाई यात्राओं पर लुटाए गए सरकारी धन को यदि किसानों के बीच बांट दिया जाता तो संभवतः प्रदेश में 89 किसान आत्महत्या नहीं करते।



■ **कांग्रेसी विधायक ने उठाए औचित्य के सवाल**

■ **जनता को क्या मिला, महज मन बहलाने को उड़े हवा में**

सरकार ने रखा सदन में लोकायुक्त प्रतिवेदन

न्यूज ट्रेक नेटवर्क (भोपाल)। राज्य सरकार ने बजट सत्र के दौरान विधानसभा के पटल पर 25 फरवरी, 11 को लोकायुक्त का वार्षिक प्रतिवेदन

वर्ष 2006-07 तथा 2007-08 सदन में रखा गया है। अभी भी 27वां वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2007-08 सदन में रखा गया है। उल्लेखनीय है कि राज्य का विषयकी दल कांग्रेस अक्सर विधानसभा के अंदर और बाहर लोकायुक्त प्रतिवेदन को लेकर सरकार पर दबाव बनाता आया है। न्यूज ट्रेक नेटवर्क ने भी अपने 15 जनवरी 2011 के अंक में इस समाचार को प्रमुखता

से प्रकाशित किया था, कि 'सरकार को सता रहा लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत'। जिसमें लोकायुक्त पीपी नावलेकर ने स्पष्ट कहा था कि संगठन ने वर्ष 2009-2010 तक के

वार्षिक प्रतिवेदन सरकार को दौखाने की गयी थी। यह सरकार के विवेक पर निर्भर करता है कि वह उन्हें कब सदन में पेश करे। मौजूदा नेता प्रतिपक्ष चौथरी राकेशसिंह चतुर्वेदी यह आरोप भी लगाते रहे हैं कि सरकार भ्रष्टाचारियों को बचाने की गज से लोकायुक्त संगठन का वार्षिक प्रतिवेदन सदन में पेश नहीं कर रही है। उन्होंने यह भी कहा था कि नियमानुसार हर साल लोकायुक्त संगठन का वार्षिक प्रतिवेदन विधानसभा के पटल पर रखा जाना चाहिए।



रखा जाना चाहिए।

सरकार को

सता रहा लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत

आशासनों के बाद भी नहीं रख पा रही विधानसभा में प्रतिवेदन



सता रहा है। प्रतिवेदन के बारे में कहा जाता है कि जनता को नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकायुक्त के प्रतिवेदन का भूत भी नहीं दिलाया जाता है।

विधानसभा में लोकाय



थोकबंद अमान्य

■ विधायक रेखा यादव ने विधानसभा सचिवालय की कार्यशैली पर लगाया प्रश्नचिन्ह ■ अधिकारी और मंत्री भी विधायकों के प्रश्नों को करवा रहे हैं अमान्य ■ इस सिलसिले को लेकर रेखा यादव ने उमा भारती से की शिकायत



राजनीतिक संगवदाता / न्यूज ट्रेक नेटवर्क

भोपाल। भारतीय जनशक्ति पार्टी की विधायक रेखा यादव ने अपने प्रश्नों के थोकबंद अमान्य होने पर विधानसभा सचिवालय पर तीखे आरोप लगा डाले हैं। आरोपों की झड़ी में विधानसभा सचिवालय के अधिकारियों परिवर्तित विभागीय अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ-साथ मरियों पर भी निशाना साधा गया है। विधानसभा सचिवालय के इस सिलसिले को लेकर उन्होंने मध्यप्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती को भी अवगत कराया है।

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार उमा भारती ने रेखा यादव को भाजश विधायक दल से चर्चा कर विधानसभा सचिवालय में धरना देने का निर्देश भी दिया है। न्यूज ट्रेक नेटवर्क के संगवदाता से चर्चा करते हुए रेखा यादव ने बताया कि वे लगातार एक साल से विधानसभा में प्रत्येक सत्र में उनके लिए आवंटित नियरित मापदण्ड के अनुसार प्रश्न जमा कर रही हैं, लेकिन विधानसभा सचिवालय के प्रश्न शाखा द्वारा उनके प्रश्नों को थोकबंद तरीके से अमान्य किया जा रहा है। इस बात को लेकर उन्होंने पूर्व में विधानसभा अध्यक्ष ईश्वरदास रोहणी को एक पत्र भी दिया था, लेकिन इसका जवाब



उन्हें आज तक नहीं मिला। हाँ, मौखिक तौर पर जरूर यह बताया गया कि उनके प्रश्नों को नियमों के तहत अमान्य किया जा रहा है।

जब उनसे यह पूछा गया कि सदन में उन्होंने इस बात को क्यों नहीं उठाया? तो उनका तर्क था- कि अगर इस तरह से अपनी बात की गई तो यह विधानसभा की अवहेलना या आसंदी के अपमान की श्रेणी में आ जाएगा। उन्होंने अप्रत्यक्ष तौर पर यह आरोप भी लगाया कि कई भ्रष्ट अधिकारी उनके प्रश्न लगाए जाने के बाद यह भी कहते देखे गए कि यह प्रश्न विधानसभा में आ ही नहीं पाएगा। जो इस बात की ओर इशारा कर रहा है कि प्रश्न शाखा के कुछ कर्मचारी अधिकारियों से मिलीभगत कर

प्रश्नों को सदन में आने ही नहीं देते हैं।

जब उन्होंने इसके कारण की तलाश की तो विधानसभा के अधिकारी यह कहते नजर आए कि प्रश्न शाखा में अनुभव की कमी वाले कर्मचारियों के आ जाने की वजह से उनके प्रश्न अमान्य हो गए होंगे। उन्होंने बताया कि एक साल में उनके मात्र 2 प्रश्न ही सदन की कार्यवाही में शामिल हो पाए हैं। उन्होंने सवाल उठाते हुए कहा कि अगर विधानसभा सचिवालय यह मानता है कि विधायकों के प्रश्न नियमों के अनुसार प्रस्तुत नहीं किए गए हैं तो नए विधायकों को ऐसा अवसर उपलब्ध कराना चाहिए जिससे वे प्रश्नों को सुसंगत तरीके से प्रस्तुत कर सकें। उन्होंने कुछ प्रश्नों

को उदाहरण स्वरूप भी बताया जिन्हें अमान्य किया गया है, लेकिन जिसमें स्पष्ट रूप से यह सिद्ध हो रहा है कि उनके प्रश्नों को जानबूझ कर अमान्य किया गया है। कुछ अन्य विधायकों से भी चर्चा में यह बात सामने आई कि नियम 36 (8), 36 (16), 36 (1) के तहत सामान्यतः प्रश्नों को अमान्य कर दिया जाता है। नियम 36 (8) ऐसे संस्थानों से संबंधित प्रश्न होते हैं जहाँ पर सीधे ही शासन राशि खर्च नहीं करती है। ऐसे विभागों में नगरीय निकाय जैसे विभागों के प्रश्न ज्यादातर होते हैं। नियम 36 (16) के तहत ऐसे प्रश्नों को अमान्य किया जाता है जो अस्पष्ट एवं विस्तृत होते हैं एवं जब इस मामले को लेकर विधानसभा अध्यक्ष ईश्वर दास रोहणी से चर्चा की तो उन्होंने इस बात पर आपत्ति जताई कि विधायक को अगर कोई समस्या है तो उसे मुझसे सीधे बात करना चाहिए। मुझे कोई भी पत्र नहीं मिला है। यह गलत परंपरा है कि विधायक पत्रकार से सीधे बात करें।

- टॉप टेन बिजली चार शहरों में इंदौर नंबर वन
- कृषि उपयोग में चोरी करने वालों की तादाद मंदसौर में ज्यादा

प्रशासनिक संगवदाता / न्यूज ट्रेक नेटवर्क

भोपाल। विद्युत संकट से जूझ रही मध्यप्रदेश सरकार के सारे प्रयास बिजली चोरी रोक पाने में असफल साबित हो रहे हैं। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार हर साल लगभग 43 फीसदी बिजली चोरों की तादाद बढ़ रही है। यह बह आंकड़े हैं जो सरकार ने छापामारी कर एकत्रित किए हैं, लेकिन सरकार कई दबंगों के इलाकों में बिजली चोरों पर मामूली कर्तव्यांक ही कर पार रही है। अगर प्राप्त आंकड़ों को देखें तो विगत दो वर्षों 2009-2010 में 69,442 और 2010-2011 में 89,945 बिजली चोरों के खिलाफ मध्यप्रदेश विद्युत मंडल की विद्युत कंपनियों ने प्रकरण दर्ज किए हैं।

प्राप्त आंकड़ों के अनुसार गत दो वर्षों में इंदौर, मंदसौर, सतना, रीवा, छिंदवाड़ा, विदिशा, सीहोर, बैतूल, राजगढ़, जबलपुर, दमोह, उज्जैन, खरगोन, धार, खण्डवा और नीमच के नाम शामिल थे।

43 फीसदी की दर से बढ़ रहे हैं बिजली चोर

सर्वाधिक बिजली चोर

क्र.	2009	2010
इंदौर	7821	9723
मंदसौर	5853	6397
सतना	3563	1991
रीवा	3475	3731
छिंदवाड़ा	3406	4610
विदिशा	3252	2248
सीहोर	3231	3089
बैतूल	2511	2435
राजगढ़	2229	1998
जबलपुर	2114	1707
उज्जैन	1995	3973
खरगोन	603	3805
नीमच	1339	3149

घरेलू बिजली चोर

क्र.	2009-10	2010-11
इंदौर	6108	5924
मंदसौर	3032	3086
सतना	2148	1991
रीवा	1798	3731
छिंदवाड़ा	1802	2918
दमोह	823	3263
खंडवा	2002	2687

औद्योगिक बिजली चोर

क्र.	2009-10	2010-11
इंदौर	1073	1668
मंदसौर	381	134
जबलपुर	345	241
सतना	340	308
भोपाल	310	151
छिंदवाड़ा	153	527
रीवा	207	381

किसानों पर बिजली का कहर

■ फसल बर्बादी की कगार पर, सरकार मौन

शेख अमुव अशरफी / न्यूज़ ट्रेक नेटवर्क

बड़वानी। प्रदेश के आदिवासी बहुल बड़वानी में किसान बिजली की आवाजाही से परेशान हो रहे हैं और सरकार मौन साथे बैठी हुई है। ऐसे में कैसे खेती लाभ का धंधा बन सकेगी, यह विचारणीय प्रश्न है। बड़वानी जिले में किसानों को बिजली की ओर समस्या से जूझना पड़ रहा है। जितनी बिजली मुहैया करायी जा रही है उससे किसान अपने खेत पर मोटर पम्प नहीं चला पा रहे हैं। इसका मुख्य कारण वोल्टेज की कमी, ट्रांसफार्मर का ओवर लोड होना भी है। बड़वानी जिले की सेंधवा,

बरला, राजपुर, निवाल, आदि तहसीलों में किसान को भारी बिजली संकट का सामना करना पड़ रहा है। खासकर सेंधवा और बरला तहसील में तो किसानों की गेहूँ और कपास की फसलों की सिंचाई नहीं हो पा रही है। सिंचाई के आभाव में फसले सूखने लगी हैं। किसानों का कहना है कि उन्हें बिजली चिराग की रोशनी के समान मिल रही है। जिसमें मोटर पम्प नहीं चल पा रहे हैं। इस समस्या को कई बार अफसरों के सामने रखा गया किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। आदिवासी अंचलों में बिजली का आलम यह है कि

विद्युत वितरण कंपनी बजाए बिजली देने के, बिजली काटने पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। विधानसभा में विपक्ष ने किसानों को लेकर जो नौटंकी की उससे भी किसानों को कोई राहत नहीं मिली है। बड़वानी सेंधवा, बरला, बलवाड़ी, हिंगना, धवली समेत कई गांवों में बिजली की समस्या बरकरार है, लेकिन सरकार सोई हुई है। इस समस्या के निदान के लिए सरकार क्या कदम उठाएगी यह तो भविष्य में ही तय हो सकेगा, किन्तु वर्तमान में किसानों के सामने अपनी फसल चौपट होते हुए देखने के और कोई चारा नहीं।

जिला स्तरीय अंत्योदय मेला संपन्न

बी.डी. यादव / न्यूज़ ट्रेक नेटवर्क

टीकमगढ़। मध्यप्रदेश की जनता और उसके मुख्या शिवराज सिंह चौहान जब मिलते हैं तो आमजन बेकाबू हो जाते हैं। बात भोपाल की हो या सूदूर क्षेत्र टीकमगढ़ की, नजारा एक ही होता है। हाल ही में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान टीकमगढ़ के पुलिस परेड ग्राउंड पर अंत्योदय मेला के मंच पर पहुंच गए, बाद का घटनाक्रम पूर्वानुसार रहा। जिससे भगदड़ मच गयी मेले में शिथिल पुलिस जनता की भगदड़ को नहीं रोक सकी जिससे भगदड़ के दौरान गरीब मजदूर किसान के साथ-साथ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी गिर पड़े और करीब एक दर्जन लोग चोटिल हो गये अन्त्योदय मेला में श्री चौहान ने 1.82 करोड़ रुपये के निर्माण कार्यों का औपचारिक शिलान्यास किया तथा लाडली लक्ष्मी योजनाओं के तहत लाडलीयों को चैक वितरित किये विभिन्न योजनाओं के तहत पात्र हितग्राहियों को भी चैक वितरित किये तथा वाहानों की चाबी सौंपी। मजदूरों के पलायन रोकने हेतु एवं पंचायतों को समय पर राशि देने की सीएम ने अपने भाषण दौरान कोई बात नहीं कही।

जात हो कि जिले में बड़े स्तर पर मजदूर पलायन कर बड़े-बड़े महानगरों में चले गये हैं और यह सिलसिला अब भी जारी है पलायन का मुख्य कारण है कि पंचायतों के खातों में समय पर राशि जारी नहीं की जाती है। जबकि पंचायत के सरपंच सचिव कार्य पूर्ण होने तथा पूर्ण कार्यों की फीडिंग सहित सभी औपचारिकताएं पूर्ण करने के बाद भी जनपद जिला पंचायत कार्यालयों में भुगतान के लिये 2 से 4 माह तक भटकते रहते हैं। और वह समय पर मजदूरों का भुगतान नहीं कर पाते तो ऐसे में भला वो मजदूर क्या करेगा। जिसे 2 जून की रोटी का कोई स्थाई ठिकाना न हो ऐसे में वह मजबूरन पलायन करने को मजबूर हो जाता है। मजदूरों एवं ग्राम पंचायत में सरपंच सचिवों में मेले को लेकर बड़ा उत्साह था



प्रदेश के मुख्या श्री चौहान हमारी समस्या का निश्चित ही कोई समाधान करें, लेकिन विचारों को जब प्रदेश के मुख्या द्वारा कोई आश्वासन नहीं मिला तो इन्हें निराशा ही हाथ लगी जबकि विकास की मुख्य धारा तो ग्राम पंचायत तथा कार्यरत मजदूरों से ही सम्पन्न होती है।

**मुख्यमंत्री ने बोरियों में
भरवाये शिकायती आवेदन**

अन्त्योदय मेला के दौरान मुख्यमंत्री ने कर्मचारियों द्वारा विभिन्न ग्रामों से परेशान लोगों को द्वारा लाये शिकायती आवेदन बोरियों में भरने को कहा और कहा-कि ये सारे आवेदन मैं अपने साथ ले जाऊंगा, लेकिन मुख्यमंत्री के जाने के बाद सारे आवेदन बोरियों में मंच पर ही पड़े रहे।

भूख हड़ताल पर बैठे सफाई कर्मचारियों की सीएम ने नहीं ली कोई सुध

कलेक्टरेट परिषद के सामने ने के अस्थाई सफाई कर्मचारियों ने 23 फवरी से अनिश्चित कालीन धरना जारी कर मुख्यमंत्री के आने के दौरान चौथे दिन भी जारी रखा इस दौरान भूख हड़ताल पर बैठी दो महिला कर्मचारियों की हालात खबाब होने से उन्हें जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया यह कर्मचारी

जीतू ठाकुर के परिजनों को मुआवजा...

एनएचआरसी ने पूछा जेल विभाग से

बृजेश गुप्ता / न्यूज़ ट्रेक नेटवर्क

इंदौर। कुख्यात बदमाश जीतू ठाकुर की हत्या के तीन साल बाद एक बार फिर उसका नाम सरकारी कागजों में जिंदा हो गया है। जिंदा रहते आपराधिक कारनामों के चलते उसका नाम पुलिस की डायरी में दर्ज हुआ करता था। मगर अब जीतू की मौत के बाद उसके परिजनों को जेल विभाग से मुआवजा दिया जाने को लेकर उसका नाम सामने आया है। राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग (एनएचआरसी) ने प्रदेश के जेल विभाग को हाल ही में एक पत्र लिखा है। हाल ही में राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग ने यह पत्र लिखा है। सूत्रों के अनुसार आयोग ने स्वयंप्रदेश जेल विभाग से पूछा है कि जीतू ठाकुर की मौत जेल में हुई है, तो क्यों ना उसके परिवार को मुआवजा दिया जाए? आयोग के इस पत्र के जवाब के लिए जीतू ठाकुर से जुड़ी फाईलों को एक बार फिर खंगाला जा रहा है। साथ ही इस मामले में राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग उसके परिजनों से जल्द ही संपर्क कर सकता है।

कैसे हुई थी मौत

जीतू ठाकुर जिले का पुराना और हिस्ट्रीशीटर बदमाश था। उसने अपना गिरोह बना लिया था। उसने अपने गुरु माने जाने वाले कुख्यात बदमाश विष्णु उस्ताद की हत्या करवा दी थी। इस मामले में वह महू उप जेल में बंद था। जहां विष्णु उस्ताद के बेटे युवराज और उसके साथियों ने जीतू की हत्या कर दी थी। संभवत जेल में हुई हत्या का देश भर में यह पहला मामला था।

क्यों पूछा मुआवजे का

दरअसल जेल में किसी कैदी की मौत होने पर मानव अधिकार आयोग तय मापदंडों के तहत उस कैदी के परिजनों को मुआवजा दिलवाता है। मुआवजे की राशि 50 हजार से लेकर 2 लाख रुपए तक होती है। मगर यह मुआवजे उन्हीं कैदियों को मिलता है जो लम्बे समय से जेल में बंद हो, जेल में उनका चाल-चलन सही हो और उन पर गंभीर अपराध नहीं हों। इसके अलावा मृतक के परिजनों की सहमति भी होना जरूरी होता है। सूत्रों के अनुसार इन मापदंडों के चलते जीतू के परिजनों को मुआवजा मिलना मुश्किल है।

समाचार पत्र
न्यूज़ ट्रेक

सब पर नज़र सब की खबर

हर खबर की हृद तक...



जीवाजी यूनिवर्सिटी की मनमानी

जीवाजी विश्वविद्यालय

तरुण दीक्षित/ न्यूज ट्रेक नेटवर्क

ग्वालियर। जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर में पिछले दो वर्षों में लाखों का बजट होने के बावजूद भी किताबों की खरीदी नहीं की गई है। जिसपे सत्र के अंत तक एक बार फिर से बजट लेप्स होने की कगार पर है। बजट लेप्स होने का यह सिलसिला पिछले दो वर्षों से जारी है। विवि में छात्रों की परीक्षाएं भी पूर्ण होने वाली हैं, मगर पुस्तकों की खरीदी को लेकर अधिकारीगण अभी भी गंभीर नहीं हैं।

न्यूज ट्रेक संगददाता ने जब विश्वविद्यालय के जिम्मेदार अधिकारियों से इस संबंध में जानने की कोशिश की तो उन्होंने कहा- कि बजट खत्म होने से पहले हम किताबों की खरीदी कर लेंगे। मगर छात्रों का कहना है कि अधिकारी तो पिछले वर्ष भी ऐसा ही कह रहे थे। उसके बाद भी बजट लेप्स हो गया और इस वर्ष भी बजट लेप्स होने की कगार पर ही है।

यूजीसी से मिला 20 लाख का बजट भी हो जाता है लेप्स, दो साल से छात्रों को उपलब्ध नहीं हुई किताबें

छात्रों के अध्ययन के लिए पुस्तकालय को अपडेट रखने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय हर साल किताबों की खरीद के लिए बजट जारी करता है, जो हर विभाग की डिमांड के अनुसार रहता है। यूजीसी भी हर वर्ष किताबों की खरीद के लिए 20 लाख रुपए का बजट जारी करती है। मगर विवि के

- बजट है मगर नहीं खरीद रहे किताबें
- छात्रों का भविष्य दांव पर
- लेप्स हो चुका है पिछले दो वर्षों का बजट

अधिकारियों की लापरवाही के चलते यह बजट हर वर्ष मार्च के अंत में लेप्स ही हो रहा है। जिसकी फिक्र किसी अधिकारी को नहीं है।

लाखों की फीस, फिर भी नहीं किताबें

छात्रों से लाखों की फीस बसूलने के बाद भी विवि द्वारा छात्रों को किताबें उपलब्ध नहीं कराई जाती। पिछले दो सालों से विवि में छात्रों के भविष्य से खिलवाड़ हो रहा है। पूरे साल किताबों का इंतजार करते-करते छात्रों की परीक्षाएं आ चुकी हैं। मगर अभी तक किताबें उपलब्ध नहीं हो पाईं। अधिकारित छात्र बाहर से किताबों का इंतजाम कर अपनी पढ़ाई कर रहे हैं। छात्रों से हर वर्ष लाखों की फीस बसूलने का ध्यान सभी को रहता है, मगर किताबें उपलब्ध कराने का ध्यान किसी को नहीं।

इनका कहना है

न्यूज ट्रेक नेटवर्क संगददाता के पूछे जाने पर कुल सचिव जीवाजी यूनिवर्सिटी आनंद मिश्रा ने किताबों की खरीदी मार्च के अंत तक पूरी करने के साथ यूजीसी बजट को भी लेप्स होने से बचाने के लिए कोशिश करने की बात कही। कुल सचिव ने कहा कि पिछले वर्ष कुछ कारण रह गए थे जिसकी बजट लेप्स हो गया था, मगर इस बार यह सब नहीं होगा।

नेत्रदान में फिसड़ी मध्यप्रदेश

केंद्र और राज्य सरकार कर रही प्रयास, प्रदेश में जागरूकता बढ़ाने की जरूरत

ब्लॉग / न्यूज ट्रेक नेटवर्क

इंदौर। नेत्रदान महादान का नारा प्रदेशवासियों को लुभा नहीं पा रहा है, या फिर यूं कहें कि नेत्रदान के लिए प्रदेश में जागरूकता लाने के लिए राज्य सरकार को और मेहनत करनी होगी। आंकड़े बताते हैं कि मध्यप्रदेश से होने वाला नेत्रदान महज कुछ फीसदी पर आकर ही रुक जाता है। जहाँ मध्यप्रदेश इस मामले में पिछड़ा वही इंदौर प्रदेश में सबसे आगे रहा है।

नेत्रहीन और दृष्टिबाधितों के जीवन में रोशनी लाने के उद्देश्य से केंद्र और राज्य सरकार नेत्रदान बढ़ाने के लिए कई तरह के प्रयास करती है। बीते साल नेत्रदान का

राष्ट्रीय लक्ष्य दो लाख कार्निया इकट्ठा करना था, मगर पूरे देश से 34 हजार 589 कार्निया ही मिले। इनमें से महज 16 हजार 259 कार्निया ही उपयोग में लिए जा सके। जो कि कुल मिले कार्निया का सिर्फ 47 फिसदी है। नेत्रदान के लिए आई बैंक एसोसिएशन ऑफ हैदराबाद ने बीते साल के आंकड़े जारी किए हैं। बैंक ने देश को 5 जोन में बांटा है, जिसमें पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और मध्य जोन। मध्यप्रदेश मध्य जोन में आता है। हमारे प्रदेश के साथ ही उत्तरप्रदेश

भी इसी जोन में आता है। बीते साल मध्य जोन से सिर्फ

744 लोगों ने नेत्रदान किया। इसमें से मध्यप्रदेश से नेत्रदान करने वाले सिर्फ 399 लोग थे। इनमें अकेले इंदौर से नेत्रदान करने वालों

की संख्या 115 थी।

आंकड़ों से अंदाजा लगाया जा सकता है कि इंदौरवासी नेत्रदान में प्रदेश के किसी भी दुसरे शहर से आगे है। वहीं प्रदेश में नेत्रदान के प्रति लोगों में अब भी कोई खास जागरूकता नहीं है।

नेत्रदान करने वालों की संख्या

उत्तर जोन	5208
दक्षिण जोन	16311
पूर्व जोन	2028
पश्चिम जोन	10298
मध्य जोन	744

शिवराज पर निशाना साधा गौर ने

■ पहले ताना, अब लेख- क्या चाहते हैं बाबूलाल?

ब्लॉग / न्यूज ट्रेक नेटवर्क

भोपाल। किसानों के दुखदाद से पीड़ित मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का 'सविय आग्रह उपवास' और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की पहल के बाद उपवास का स्थान लिया जाना भारतीय जनता पार्टी के कई नेताओं को विचलित कर रहा है। सर्वाधिक विचलित नगरीय प्रशासन मंत्री बाबूलाल गौर हैं, जो किसी समय इस सूचे के मुख्यमंत्री हुआ करते थे।

उपवास स्थगित किए जाने की घोषणा के बाद पहली कैमेनेट बैठक में ही गौर ने विचलित होकर शिवराज पर कटाक्ष कर डाला 'साहब जो हो गया यो हो गया, अब तो शहर में लगे पोस्टर उतावा दो' गौर का इन कहाना था कि शिवराज अबाक रह गए। शिवराज के साथ-साथ अन्य मंत्री भी अबाक रह गए।

कुछ दिन बीते नहीं कि गौर को लेख लिखने की सज्ज गई। 'किसानों के प्रति न्याय जरूरी'

शीर्षक के नाम का लेख विधानसभा सत्र शुरू होते ही अखबारों में प्रकाशित हो गया।

हालांकि गौर ने किसानों के प्रति जायज चिताओं का जिक्र किया है, लेकिन निशाने पर मध्यप्रदेश सरकार भी ही है। इस लेख में गौर ने मध्यप्रदेश के कृषि विभाग और सहकारिता विभाग को भी अप्रत्यक्ष तौर पर निशान बनाते हुए समय अनुरूप निर्णय न लेने का ओराप लगाया है। विजली के मामले में भी इच्छा शक्ति के अभाव से ऊँज़ विभाग को ज़ुँझना बताया है। इसी के साथ ही उहोने प्रदेश में नपां रहे भूमाफियां जो किसानों की खेतीहर जमीन को ज़ुँझ रहे हैं को लेकर भी सरकार पर निशान साथा है। इस लेख के बाद सरकार और सरकार से जुड़े हुए लोग इसका अर्थ तलाशने जुट गए हैं कि अखिर गौर ऐसा क्यों कर रहे हैं?



राजनीति

62 विधायक झगड़े

■ एकजुटता के अभाव में मप्र कांग्रेस विक्ष के तीखे तेवर नहीं दिखला पा रही है, जबकि हालात कांग्रेस के अनुकूल हैं। गुटबाजी से त्रस्त कांग्रेस को लेकर राजनीतिक प्रेक्षक आंकलन कर रहे हैं कि अब यह रसातल में जाकर ही संपूर्ण कांग्रेस को लील लेगी।



संजय शुक्ला / न्यूज ट्रेक नेटवर्क

भोपाल। मध्यप्रदेश कांग्रेस इन दिनों दुर्दिनों का शिकार है। प्रदेश की कानून व्यवस्था किंवदं रही है, भैयाचार चम्स पर है, किसान आम्हत्या का रहे हैं, लेकिन कांग्रेस अपने विषयी लेवरों को दिखला नहीं पा रही है। कहने को मध्यप्रदेश विधानसभा में 62 विधायकों की संख्या ताकतवर मानी जा सकती है, लेकिन हर विधायक एकला चलो की रणनीति ही अपनाए हुए हैं। हाल ही में यह झगड़ा नेता प्रतिष्ठक चम्स को लेकर सामने आ गया, जब नेता प्रतिष्ठक पद के 7 दावेदारों ने अजय सिंह गहल, नर्मदा प्रसाद प्रजापति, बिसाहूलाल सिंह, महें सिंह कालूखेड़ा, कल्पना परुलेकर, बाला बच्चन और चौधरी बच्चन को आंखों की खेतीहर जमीन को ज़ुँझ रहे हैं।

अजय सिंह गहल का समर्थन पुरजोर तरीके से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के

कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सुरेश पांचारी, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महामंत्री और बिसाहूलाल सिंह, केंद्रीय मंत्री कलनाथाथ, ज्ञातिशदित्य सिध्धिया के बीच ही चल रहा है। जिसके चलते मध्यप्रदेश विधानसभा में भी हरिप्रसाद और संघर्ष कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सुरेश पांचारी आगे बढ़ रहे हैं। अगले बड़े बदलाव में किसी भी प्रकार का फैसला होने की संभावना नजर नहीं आ रही है। कायासबाजियों के बीच राजनीतिक प्रेक्षकों का मानना है कि अब आला कमान भी असमंजस की स्थिति में आ गया है और हाल-फिलहाल में किसी भी प्रकार का फैसला जाकर हालात तो इस सत्र में सरकार को मजबूती के साथ देंगे जा सकते थे, लेकिन विधायक के चलते यह सब नहीं हो गया है। अगले विधायकों में सबसे अलग अंतिम भोपाल के विधायक अरिफ अकील की है, जिन्हें कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर साथी विधायकों का समर्थन नहीं मिल पाता है। इसी प्रकार कल्पना परुलेकर को भी अपनी लड़ाई अकेले ही लड़ा चली है।

सुरों के अनुसार हरवर्ष सिंह को इस

बाबा के लिए मना भी लिया गया है। यह सारी कवायद मध्यप्रदेश में राजनीतिक और जातित भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सुरेश पांचारी आगे बढ़ा रहे हैं। केंद्रीय मंत्री कलनाथाथ, ज्ञातिशदित्य सिध्धिया के बीच ही चल रहा है।

मध्यप्रदेश के इस झगड़े को लेकर अब आला कमान भी असमंजस की स्थिति में आ गया है और हाल-फिलहाल में किसी भी प्रकार का फैसला होने की संभावना नजर नहीं आ रही है। कायासबाजियों के बीच राजनीतिक प्रेक्षकों का मानना है कि अब प्रतिष्ठक के साथ-साथ मध्यप्रदेश विधानसभा के उपाध्यक्ष पद का फैसला भी नहीं सिरे से लिया जा सकता है। वरमान में विधायकों और आला नेताओं के आपसी झगड़ों के बाद नेता प्रतिष्ठक का नाम तय नहीं कर पाये। मसलन फैसला संघर्ष दबावर को सौंदिया गया। सही मायने में नेता प्रतिष्ठक तय करने की लड़ाई मध्यप्रदेश

- भाजश कार्यकर्ताओं को लगाया गौर राजनीतिक कार्य में
- खुद मंदिर बचाने गई और कार्यकर्ताओं को 'गौ-वंश बचाओ, खेत बचाओ और देश बचाओ' में लगाया
- 90 हजार करोड़ की अर्थव्यवस्था को सुधार सकती हैं गाय

उमा का नया दाव

अजय मिश्रा / न्यूज ट्रेक नेटवर्क

भोपाल। राजनीति से मोह बिछोह के खेल में अब उमा भारती ने आत्मीय जनशक्ति पार्टी कार्यकर्ताओं को एकजुट रखने के लिए गौर

राजनीतिक कार्यकर्ताओं में बिछु दिया है। उमा खुद इन दिनों गंगा की झूब में आ रहे एक मंदिर को बचाने की जायेगी।

जगह

हाल ही में मध्यप्रदेश में किसानों की लगातार आत्महत्या प्रदेश के राजनीतिक कार्यकर्ताओं द्वारा चौथे हैं। उमा भारती और उनकी पार्टी इन दिनों अपने राजनीतिक बज़ुट को लेकर मनन के दौर में हैं।

ऐसे समय कार्यकर्ताओं का विहंग रोकना अच्युत जरूरी है। सो 'सामाजिक और राजनीतिक' हित एक साथ साथने की पहल शुरू की गई है।

शुरूआत

इसी समाजी सीहोह जिले के ब्रिजेश नगर में संकल्प पत्र भरवाने का अभियान शुरू किया गया। किसान



संघर्ष मोर्चा मध्यप्रदेश के इस शुभारंभ कार्यक्रम में खुद उमा भारती मौजूद हीं। इस दौरान गौ-पूजन एवं हवन किया गया। उहोने हिंदूओं से गौ-वंश की रक्षा करने को तो कहा ही साथ ही मुसलमानों से भी अपील की कि 'वे दूध का कर्ज उतारें, हिंदू धर्म में गाय को माँ का दर्जा दिया गया और कुरुंग में भी लिखा है कि माँ की रक्षा की जाना चाहिए।'

उमा का मंदिर एजेंडा

उमा भारती स्वयं उत्तराखण्ड में बन रहे गंगा नदी पर एक बांध के दूब में आ रहे मंदिर को बचाने के लिए संकल्पित हैं। इन दिनों वे उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री रमेश चंद्र वैद्यरियाल से मिलने के लिए गई हैं। गौरतलव है कि धाराजी में

दुर्गा का एक प्रसिद्ध मंदिर है जो दूब में आ रहा है। पूर्व में उमा भारती के प्रयासों से मंदिर तक पुल बनाए जाने की योजना पर काम चल रहा था, लेकिन हाल ही में बांध की ओंचांड बढ़ने से यह मंदिर दूब में आ गया है। यह सारी कवायद मध्यप्रदेश में राजनीतिक और जातित भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सुरेश पांचारी आगे बढ़ा रहे हैं।

अंथर्यामी विद्युत और पैदावार की नियमण भी कर सकता है जो देश में आ

गया है। अगर सही तरीके से गौ-वंश की रक्षा कर ली गई तो करोड़ बूँदों की अवधारणा ही बढ़ावा देगी।

अब मोर्चा का नाम बदलने की तैयारी

ताबड़ोंदे तरीके से किसान संघर्ष मोर्चा का गठन तो कर लिया गया, लेकिन अब इस मोर्चे का नाम बदलने की तैयारी की जा रही है। गौरतलव है कि इस मोर्चे के साथ उमा भारती अपने प्रिय अभियान 'पंच-ज' (जल, जंगल, जमीन, जानवर और जन) को भी जोड़ा चाह रही है।



सलाम इंडिया

गगनबीर का जुनून मुश्किलों ने टेके घुटने

दिल में कुछ कर गुजरने का जज्बा और जुनून हो तो तमाम मुश्किलों को छुटने टेकने पड़ते हैं। भले ही यह मुश्किल शारीरिक अपेक्षा के रूप में ही क्यों न हो! नेत्रहीनता जैसी एक ऐसी ही मुश्किल अहमदाबाद के गगनबीर सिंह छबड़ा की ताल पर भांगड़ा करती नज़र आई, जब उन्होंने बिल्ली के गले में घंटी बांध दी। गगनबीर देख नहीं सकते, इसके बावजूद कैट परीक्षा में उन्होंने 94 परसेंट हासिल किए। उन्हें 5 आईआईएम से कॉल आई। आईआईएम बैंगलुरु और कोलकाता ने गगन की हिम्मत को सलाम करते हुए उन्हें एडमिशन का ऑफर भी कर दिया है।



आईआईएम की डिग्री को आमतौर पर मोटी तनखाह की गारंटी माना जाता है, लेकिन गगन की निगाहें कहीं और हैं। अपनी पढ़ाई पूरी कर लेने के बाद गगन कॉर्पोरेट जगत का हिस्सा नहीं बनना चाहते, बल्कि सरकारी और अर्द्धसरकारी संस्थानों में रुकर कुछ अनुभव हासिल करना चाहते हैं। उनके लक्ष्य भी बेहद साफ हैं। वह साफ शब्दों में कहते हैं कि आज से 10 साल

बाद मैं भारत का बेस्ट मानव संसाधन प्रबंधक बनना चाहता हूं। जन्म से ही नेत्रहीनता लगभग 15 से 20 प्रतिशत की दृष्टि की समस्या से जूझ रहे 22 वर्षीय गगनबीर का आईआईएम तक पहुंचने का सफर आसान नहीं रहा। नेत्रहीनता के चलते अने वाली समस्याओं और लोगों के कमेंट्स ने गगनबीर के उत्साह को कदम-कदम पर तोड़ने की कोशिश की, लेकिन अपनी मां की प्रेरणा से आईआईएम का खाब संजोने वाले इस शख्स ने आखिर में अपने सभी आलोचकों को गलत साबित कर दिया। गौरतलब है कि ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट की पढ़ाई के दौरान भी उन्होंने टॉप रैंक हासिल की थी। कामयाबी का पूरा श्रेय मां स्वर्गीय हरिंद्र कौर को देने वाले गगनबीर को किसी से कोई शिकायत नहीं है, बस एक दुख जरूर है। वह यह कि शानदार कामयाबी के इन लम्हों में काश! आज उनकी मां उनके साथ होती।

चर्चित चेहरे



पीएम के दरबार में पहुंची बाबा की लड़ाई

योगगुरु बाबा रामदेव की संपत्ति को लेकर शुरू हुई लड़ाई अब प्रधानमंत्री के दरबार में पहुंच गई है। उत्तराखण्ड के कुछ विधायकों ने प्रधानमंत्री से बाबा रामदेव की संपत्ति की जांच कराने की मांग की है। इन विधायकों का कहना है कि बाबा की संपत्ति में तेजी से इजाफा हो रहा है। जिससे लोगों के मन में साधुओं के प्रति संदेह पैदा होने लगा है। टिहरी से काग्रेस विधायक किशोर उपाध्याय समेत अन्य विधायकों ने पीएम को इस संबंध में पत्र लिखा है।



काले धन पर धिरे जरिस बालाकृष्णन

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष एवं देश के पूर्व सीजेआई के जी बालाकृष्णन अपने परिजनों के पास आय से अधिक संपत्ति के मामले में घिरते नजर आ रहे हैं। उनके भाई केजी भास्करन एवं दो दामादों के खिलाफ जांच में काला धन पाया गया है। कोच्ची में आयकर महानिदेशक जांच ईटी लुकोस ने इसकी पुष्टि की है।



विदेश यात्रा का दाव



राग-राज

महाकौशल क्षेत्र के एक विधायक इन दिनों शिद्दत के साथ विदेश यात्रा की तैयारी कर रहे हैं। हालांकि उनका नाम यात्रा पर जाने वाले प्रतिनिधि मंडल में तय नहीं हुआ है, लेकिन वे इसके लिए पुरजोर प्रयास कर रहे हैं। प्रभारी नेता प्रतिपक्ष ने उन्होंने एक पत्र भी लिखा लिया, लेकिन उनके इस पत्र को लेकर एक आला नेता ने कह दिया कि पत्र तो प्रभारी नेता प्रतिपक्ष आपको दे रहे हैं, लेकिन उन्होंने किसी और के नाम की सिफारिश मुश्वरे की है।

ईमानदाराना स्वीकारोक्ति



कार्यक्रम में नहीं गए? वे बड़ी मासूमियत से जवाब दे उड़े कि मैं इन दिनों मोटरसाइकिल पर हूं, इसीलिए नहीं गया।

भारतीय जनता पार्टी के एक मोर्चा अध्यक्ष की ई मानदाराना स्वीकारोक्ति रही जब उनसे अन्य नेता ने यह पूछा कि आप अध्यक्ष जी के

मध्यप्रदेश भाजपा के दो वरिष्ठ नेता जब मिले तो उनका संवाद बड़ा ही रोचक किस्म का था। एक वरिष्ठ नेता ने दूसरे से कहा-उपाध्यक्ष जी नमस्कार, तो उपाध्यक्ष कह उठे- वरिष्ठ उपाध्यक्ष जी नमस्कार। तभी साथ खड़े एक कार्यकर्ता ने कहा और भाई साहब आपका तो प्रमोशन हो गया। तभी वे कह उठे हां, तीन दिन बाद इस पद की गरिमा भी गिर गई। हम आपको बता दें गरिमा गिरने का कारण तीन दिन बाद ही उपाध्यक्ष के पद पर एक ऐसे विधायक की नियुक्ति रही जो जमीनों के मामले में काफी चर्चित हैं।



अफसरनामा

इंदौर पुलिस की परेशानी



हिंदू आतंक वाद की गिरफ्त में फंसे नेताओं को लेकर इंदौर पुलिस परेशानियों में घिर गई है। मामला कुछ इस प्रकार है कि कुछ दिन पूर्व ही अजमेर ब्लास्ट से संबंधित एक आरोपी को इंदौर लाया गया तो उसका जोरदार स्वागत किया गया। हाल ही संबादना बनी थी कि स्वामी प्रजा को भी इंदौर लाया जा सकता है तो इंदौर में स्वागत के पम्पलेट्स लग गए। ताबड़ोड़ तरीके से इन्हें हटवाया भी गया, लेकिन अब सुनने में आ रहा है कि आईएस अफसर ने हाल ही में अपनी महिला मित्र को एक कार गिरफ्त की है।

कि आगामी दिनों में स्वामी प्रजा का जोरदार स्वागत किए जाने की तैयारी भी चल रही है। बस इसी बात ने पुलिस को परेशान कर रखा है।

महिला मित्र से परेशानी



मध्यप्रदेश के एक आला आईएस अधिकारी अपनी एक पूर्व महिला मित्र से परेशान हो उठे हैं। उक्त महिला ने हाल ही में पत्रकारों की विगदारी में उठना-बैठना शुरू कर दिया है। अपने पूर्व संबंधों को लेकर उक्त महिला आईएस अफसर को परेशान करती है। सुनने में आया है कि आईएस अफसर ने हाल ही में अपनी महिला मित्र को एक कार गिरफ्त की है।



महत्वपूर्ण बात

मेजर मिताली को सेना मेडल



सेना में स्थाई कमीशन के लिए भले ही महिलाओं को लंबी जद्दोजहाद करना पड़ रही हो, लेकिन मेजर मिताली मध्यमिता ने पहला सेना मेडल प्राप्त कर इतिहास रच दिया है। वो वीरता के लिए सेना मेडल प्राप्त करने वाली पहली महिला बन गई है। मिताली को कावूल में 2010 में भारतीय दूतावास पर हुए आतंकी हमले के बाद अद्य साहस, शैर्ष और वीरता के लिए सम्मानित किया गया है। दक्षिण पश्चिमी कमान के योद्धा हाल में मिताली को मेडल प्रदान किया गया।

चर्चित चेहरे



पीएम के दरबार में पहुंची बाबा की लड़ाई

योगगुरु बाबा रामदेव की संपत्ति को लेकर शुरू हुई लड़ाई अब प्रधानमंत्री के दरबार में पहुंच गई है। उत्तराखण्ड के कुछ विधायकों ने प्रधानमंत्री से बाबा रामदेव की संपत्ति की जांच कराने की मांग की है। इन विधायकों का कहना है कि बाबा की संपत्ति में तेजी से इजाफा हो रहा है। जिससे लोगों के मन में साधुओं के प्रति संदेह पैदा होने लगा है। टिहरी से काग्रेस विधायक किशोर उपाध्याय समेत अन्य विधायकों ने पीएम को इस संबंध में पत्र लिखा है।



काले धन पर धिरे जरिस बालाकृष्णन

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष एवं देश के पूर्व सीजेआई के जी बालाकृष्णन अपने परिजनों के पास आय से अधिक संपत्ति के मामले में घिरते नजर आ रहे हैं। उनके भाई केजी भास्करन एवं दो दामादों के खिलाफ जांच में काला धन पाया गया है। कोच्ची में आयकर महानिदेशक जांच ईटी लुकोस ने इसकी पुष्टि की है।



टाटा सफारी के लिए रूठे जयभान

बीस सूत्रीय क्रियाव्यवस्था के उपाध्यक्ष जयभान सिंह पवैया टाटा सफारी ने मिलने से खासे नाराज हो गए हैं। इसका इजहार उन्होंने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को पत्र लिखकर किया है। जिसमें पवैया ने अपना दुख प्रकट किया और लिखा है कि मुझे राज्यमंत्री का दर्जा मिला है, फिर भी पिछले दो साल से वाहन नहीं दिया गया, जबकि मरियों को कई टाटा सफारी दे दी गई हैं।





आजकल 100 में से लगभग 40 बच्चों को दांतों में कीड़ा लगने की समस्या पाई जाती है। इसका कारण चॉकलेट, टॉफी और अन्य मीठे पदार्थों का सेवन तथा माता-पिता की ओर से बच्चों के दांतों की साफ सफाई पर ध्यान न दिया जाना है। उन्होंने कहा कि बच्चों के किसी दांत में कीड़ा नजर आने पर तुरंत डॉक्टर से संपर्क किया जाना चाहिए।

दूध के दांतों को भी चाहिए देखभाल

रक्तदान करें जीवन बचाएं

शायद आपने पहले कभी इस बात पर ध्यान नहीं दिया होगा कि आपके रक्त की कृष्ण बूँदें किसी को जीवन दे सकती हैं। हर दूसरे सेकण्ड में दुनिया भर में कोई न कोई ज़िंदगी मौत से जूँझ रही होती है, ऐसे में आपका रक्त किसी को जीवनदान दे सकता है। ज्यादातर लोग रक्तदान इसलिए नहीं करते क्योंकि उन्होंने रक्तदान के विषय में अपने मन में गलत धारणाएं पाल रखी हैं। कुछ लोगों का तो यह भी मानना है कि रक्तदान करने से एइस हो सकता है। रक्तदान पूरी तरह सुरक्षित होता है, इसके लिए कीटाणुमुक्त डिप्सोजेबल सिरिज का प्रयोग होता है। आप किसी भी रक्तदान शिविर में जाकर देख सकते हैं। हाँ, रक्तदान से पहले और बाद में आपको कुछ सामान्य बातों का ध्यान ज़रूर रखना होता है।

क्या आप रक्तदान के योग्य हैं

रक्तदान करने वाले व्यक्ति की उम्र 17 साल से अधिक होनी चाहिए। रक्तदान के लिए वही लोग योग्य होते हैं, जिनका वज़न 45 किलो से अधिक होता है। महावारी के दौर से गुजर रही महिलाएं या बच्चे को स्तनपान करने वाली महिलाएं रक्तदान नहीं कर सकती। अगर आपने रक्तदान के 48 घंटे पहले एल्कोहल का सेवन किया है तो आप रक्तदान नहीं कर सकते। रक्तदान करने वाले व्यक्ति के हीमोग्लोबीन का स्तर 12 प्रतिशत से अधिक होना चाहिए। रक्तदान से पहले धूम्रपान ना करें। रक्तदान से पहले और बाद में पौष्टिक भोजन करें। ध्यान रखें रक्तदान के लिए डिप्सोजेबल सिरिज का ही प्रयोग किया जा रहे हैं। हम या हमारे प्रियजनों में से कोई भी, कभी भी दुर्घटना का शिकार हो सकता है, ऐसे में हो सकता है, आपके रक्त की कुछ बूँदों से किसी की जान बच जाये। रक्तदान करें और अपने मित्रों और रिश्तेदारों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

छोटे बच्चों के दांतों को दूध के दांत समझकर आम तौर पर माता पिता उनकी साफ सफाई खतरनाक साबित हो सकती है। टॉफी, चॉकलेट तथा अन्य ऐसी ही चीजें बच्चे बड़े शौक से खाते हैं, लेकिन इनके अंश दांतों में फंसे रह जाते हैं और सही साफ सफाई के अभाव में वह बच्चों के दांतों में कीड़ा (कैविटी) पैदा करने के लिए काफी होते हैं। भोपाल के वरिष्ठ दंत रोग विशेषज्ञ डॉ वीरेंद्र सिंह के अनुसार बच्चों के दांतों की सफाई पर ध्यान देने की अत्यधिक ज़रूरत है। ऐसा न किए जाने पर दांतों में कीड़ा लग सकता है जिसका संक्रमण धीरे-धीरे अन्य दांतों तथा मसूड़ों तक भी फैल सकता है। डॉ. सिंह के अनुसार एक सर्वेक्षण से पता चला है कि आजकल 100 में से लगभग 40 बच्चों को दांतों में कीड़ा लगने की समस्या पाई जाती है। इसका कारण चॉकलेट, टॉफी और अन्य मीठे पदार्थों का सेवन तथा माता-पिता की ओर से बच्चों के दांतों की साफ सफाई पर ध्यान न दिया जाना है। उन्होंने कहा कि बच्चों के किसी दांत में कीड़ा नजर आने पर तुरंत डॉक्टर से संपर्क किया जाना चाहिए। यह सोचकर नहीं बैठ जाना चाहिए कि बच्चों के दांत दूध के दांत हैं और इनके गिरने के बाद नए दांत निकल ही आएंगे। डॉ. सिंह के अनुसार कीड़े का संक्रमण मसूड़े तक पहुँचने पर बच्चे को अत्यधिक पीड़ा हो सकती है और फिर समय से पहले दांत गिरने या चिकित्सक की ओर से उसे निकाले जाने के सिवाय कोई दूसरा विकल्प नहीं बचता।

दंत रोग विशेषज्ञों का कहना है कि आम तौर पर चॉकलेट या अन्य मीठे पदार्थों की वजह से बच्चों के दांतों में कीड़ा लग जाता है। इस बारे में पता लगने पर तुरंत डॉक्टर से संपर्क किया जाना चाहिए। ऐसी स्थिति में डॉक्टर मसाला या चांदी भरकर दांत के खोखले हिस्से को दुरुस्त कर देते हैं। उन्होंने कहा कि दांत पूरा खोखला हो जाने की स्थिति में उसे निकाल देना ही उचित रहता है।

बच्चों का कोई दांत समय से पहले निकल जाने से उसके आने वाले दांत पर असर पड़ सकता है। डॉ. सिंह ने कहा कि दूध के दांत समझकर बच्चों के दांतों की साफ सफाई को नजरअंदाज करना खतरनाक हो सकता है। दंत रोग विशेषज्ञ के अनुसार यदि बच्चा किसी दांत में दर्द या किसी अन्य समस्या की शिकायत करे तो तुरंत चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए। उन्होंने कहा कि दांतों में दर्द कई वजह से होता है। यह कीड़ा लगने के कारण भी हो सकता है और मसूड़ों तथा दांतों के बीच अंतराल पैदा हो जाने से भी हो सकता है।

ताकी हॉंठ रहे गुलाबी

आगर लिप्स कोमल और सुंदर हो तो फेस पर कितने अट्रैक्टिव लगते हैं इसका अंदाजा तो कोई भी लगा सकता है। लेकिन बदलते मौसम की मार इहें कटाफटा बना देती है। ऐसे में इनकी एकस्ट्रा केयर बहुत ज़रूरी है। ताकि इनकी खूबसूरती बनी रहे। कैसे रखें इहें खूबसूरत यह एक बड़ी समस्या है, लेकिन कुछेक उपाय जो बहुत आसान भी हैं अपना कर आप अपने अंगों की सुखी कायम रख सकती हैं। जिनमें अधिक से अधिक पानी पीना और लैंडी डाइट लें। इसमें हरी पतेदार सब्जियां, टमाटर, ग्रेस, विटामिन ए वैश्वार होना चाहिए। लिप्स पर शहद लगाया जा सकता है। शहद लगाने के बाद इसे ड्राइ होने दें। फिर वैसलीन लगाएं। करीब 15 मिनट बाद इसे हटा दें। इसे एक दिन में दो बार करें। काफी फायदा होगा। तुरंत राहत पाने के लिए आप खीरे की फांक भी लगा सकते हैं। डेमेज स्किन के लिए एलोवेरा काफी अच्छा रहता है। लिप्स पर एलोवेरा जेल लगा सकते हैं।

कोलेस्ट्रोल को काबू में करने के लिए सौंफ का सहारा लेकर देखिए। जो हांसौंफ में कैल्शियम, सोडियम, फास्फोरस, आयरन और पोटेशियम जैसे अहम तत्व होते हैं। यूनानी दवाओं में सौंफ की बेहद सिफारिश की जाती है। पेट के कई विकारों जैसे मरोड़, दर्द और गैस्ट्रो विकार के उपचार में यह बहुत लाभकारी है। सौंफ याददाश्त और नेत्र ज्योति बढ़ाती है। इससे कफ का इलाज हो सकता है और इससे कोलेस्ट्रॉल का काबू में रहता है। कई रिसर्च के बाद सौंफ के सेहत भरे फायदे साबित भी हो चुके हैं। भोजन के बाद रोजाना 30 मिनट बाद सौंफ लेने से कोलेस्ट्रॉल का काबू में रहता है। लीवर और आंखों की ज्योति ठीक रहती है। अपच संबंधी विकारों में सौंफ बेहद उपयोगी है। बिना तेल के तवे पर भुनी हुई सौंफ के मिक्सचर से अपच के मामले में बहुत लाभ होता है। दो कप पानी में उबली हुई एक चम्मच सौंफ को दो या तीन बार लेने से अपच और कफ की समस्या समाप्त होती है। अस्थमा और खांसी में सौंफ सहायक है। कफ और खांसी के इलाज के लिए सौंफ खाना फायदेमंद है।

सेहत भरी है सौंफ





भगवान की शक्ति से संचालित है विश्व

सर्वत्यापक परमात्मा ही भगवान श्रीविष्णु हैं। वह संपूर्ण विश्व भगवान विष्णु की शक्ति से ही संचालित है। वे निरुण भी हैं और सगुण भी हैं। वे अपने चार हाथों में क्रमशः शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण करते हैं। जो किटी और कुण्डलों से विभूषित, पीताम्बरधारी, बनमाला तथा कौसुभमणि को धारण करने वाले, सुंदर कमलों के समान नेत्र वाले भगवान श्रीविष्णु का ध्यान करता है वह भव बन्धन से मुक्त हो जाता है।

पद्मपुराण के उत्तरखण्ड में वर्णन है कि भगवान श्रीविष्णु ही परमार्थ तत्व हैं। वे ही ब्रह्मा और शिव सहित सृष्टि के आदि कारण हैं। वे ही नारायण, वासुदेव, परमात्मा, अच्युत, कृष्ण, शाश्वत, शिव, ईश्वर तथा हिरण्यगर्भ आदि अनेक नामों से पुकारे जाते हैं। नर अर्थात् जीवों के समुदाय को नार कहते हैं। संपूर्ण जीवों के आश्रय होने के कारण भगवान श्रीविष्णु ही नारायण कहे जाते हैं। कल्प के प्रारम्भ में एकमात्र सर्वव्यापी भगवान नारायण ही थे। वे ही संपूर्ण जगत की सृष्टि करके सबका पालन करते हैं और अंत में सबका संहार करते हैं। इसीलिए भगवान श्रीविष्णु का नाम हरि है। मत्स्य, कूर्म, वाराह, वामन, श्रीराम, कृष्ण आदि अवतारों की कथाओं में भगवान श्रीविष्णु की भक्तवत्सलता के अनेक आख्यान सामने आये हैं। वे जीवों के कल्याण के लिए अनेक रूप धारण करते हैं। वेदों में इन्हीं भगवान श्रीविष्णु की अनन्त महिमा का गान किया गया है।

विष्णुधूमोर्त युग्म में वर्णन है कि लवणसमुद्र के मध्य में विष्णुलोक अपने ही प्रकाश से प्रकाशित है। उसमें भगवान श्रीविष्णु वर्षा त्रृष्णु के चार मासों में लक्ष्मी द्वारा सेवित होकर शेष शस्या पर शयन करते हैं। बैकुण्ठ धाम के अनन्तर्गत अयोध्या पुरी में एक दिव्य मण्डप है। मण्डप के मध्य भाग में रमणीय सिंहासन है। वेदमय धर्मादि देवता उस सिंहासन को नित्य घेरे रहते हैं। धर्म, ज्ञान, ऐश्वर्य, वैराग्य सभी वहां उपस्थित रहते हैं। मण्डप के मध्य भाग में अग्नि, सूर्य और चंद्रमा रहते हैं। कूर्म, नागराज तथा संपूर्ण वेद वहां पीठ रूप धारण करके उपस्थित रहते हैं। सिंहासन के मध्य में अष्टदल कमल है, जिस पर देवताओं के स्वामी परम पुरुष भगवान श्रीविष्णु लक्ष्मी के साथ विराजमान रहते हैं। भक्त वत्सल भगवान श्रीविष्णु की प्रसन्नता के लिए जप का प्रमुख मंत्र- ओम नमो नारायणाय तथा ओम नमो भगवते वासुदेवाय है।

भगवान श्रीविष्णु अत्यंत दयालु हैं। वे अकारण ही जीवों पर करुणा वृष्टि करते हैं। उनकी शरण में जाने पर परम कल्याण हो जाता है। जो भक्त भगवान श्रीविष्णु के नामों का कीर्तन, स्मरण, उनके अच्छायिका का दर्शन, वंदन, गुणों का व्रतण और उनका पूजन करता है, उसके सभी पाप विनाश हो जाते हैं। यद्यपि भगवान श्रीविष्णु के अनन्त गुण हैं, तथापि

उनमें भक्तवत्सलता का गुण सर्वोपरि है। चारों प्रकार के भक्त जिस भावना से उनकी उपासना करते हैं, वे उनकी उस भावना को परिपूर्ण करते हैं। ध्रुव, प्रह्लाद, अजमिल, द्रौपदी, गणिका आदि अनेक भक्तों का उनकी कृपा से उद्धार हुआ। भक्त वत्सल भगवान को भक्तों का कल्याण करने में यदि विलम्ब हो जाये तो भगवान उसे अपनी भूल मानते हैं और उसके लिए क्षमा याचना करते हैं। मत्स्य, कूर्म, वाराह, वामन, श्रीराम, कृष्ण आदि अवतारों की कथाओं में भगवान श्रीविष्णु की भक्तवत्सलता के अनेक आख्यान सामने आये हैं। वे जीवों के कल्याण के लिए अनेक रूप धारण करते हैं। वेदों में इन्हीं भगवान श्रीविष्णु की अनन्त महिमा का गान किया गया है।

विष्णुधूमोर्त युग्म में वर्णन मिलता है कि लवणसमुद्र के मध्य में विष्णुलोक अपने ही प्रकाश से प्रकाशित है। उसमें भगवान श्रीविष्णु वर्षा त्रृष्णु के चार मासों में लक्ष्मी द्वारा सेवित होकर शेष शस्या पर शयन करते हैं। बैकुण्ठ धाम के अनन्तर्गत अयोध्या पुरी में एक दिव्य मण्डप है। मण्डप के मध्य भाग में रमणीय सिंहासन है। वेदमय धर्मादि देवता उस सिंहासन को नित्य घेरे रहते हैं। धर्म, ज्ञान, ऐश्वर्य, वैराग्य सभी वहां उपस्थित रहते हैं। मण्डप के मध्य भाग में अग्नि, सूर्य और चंद्रमा रहते हैं। कूर्म, नागराज तथा संपूर्ण वेद वहां पीठ रूप धारण करके उपस्थित रहते हैं। सिंहासन के मध्य में अष्टदल कमल है, जिस पर देवताओं के स्वामी परम पुरुष भगवान श्रीविष्णु लक्ष्मी के साथ विराजमान रहते हैं। भक्त वत्सल भगवान श्रीविष्णु की प्रसन्नता के लिए जप का प्रमुख मंत्र- ओम नमो नारायणाय तथा ओम नमो भगवते वासुदेवाय है।

पद्मपुराण के उत्तरखण्ड में वर्णन है कि भगवान श्रीविष्णु ही परमार्थ तत्व हैं। वे ही ब्रह्मा और शिव सहित सृष्टि के आदि कारण हैं। वे ही नारायण, वासुदेव, परमात्मा, अच्युत, कृष्ण, शाश्वत, शिव, ईश्वर तथा हिरण्यगर्भ आदि अनेक नामों से पुकारे जाते हैं। नर अर्थात् जीवों के समुदाय को नार कहते हैं। संपूर्ण जीवों के आश्रय होने के कारण भगवान श्रीविष्णु ही नारायण कहे जाते हैं। कल्प के प्रारम्भ में एकमात्र सर्वव्यापी भगवान नारायण ही थे। वे ही संपूर्ण जगत की सृष्टि करके सबका पालन करते हैं और अंत में सबका संहार करते हैं। इसीलिए भगवान श्रीविष्णु का नाम हरि है। मत्स्य, कूर्म, वाराह, वामन, हयग्रीव तथा श्रीराम-कृष्णादि भगवान श्रीविष्णु के ही अवतार हैं।

यद्यपि भगवान श्रीविष्णु के अनन्त गुण हैं, तथापि



‘धन से नहीं मिलती शांति’

मनुष्य जीवन अनमोल है। उसे लोग सुख की खोज में लगा रहे हैं और सुख को धन में खोज रहे हैं। धन अर्जित करने के लिए लोग पाप करने से भी नहीं चूकते। जहां तक मनुष्य की चलती है, वह धन अर्जित करने के लिए साम, दाम, दंड और भेद का इस्तेमाल कर रहा है। यह कहना है कि महामंडले श्रीरामायणी भैयादासजी महाराज का। प्रवचन के दौरान उन्होंने कहा कि मनुष्य हर प्रकार से धन एकत्रित कर रहा है। धन से केवल साधन मिल सकता है शांति नहीं। अगर इस अनमोल जीवन में शांति प्राप्त करनी है, तो सबसे पहले जीव के अंदर परमात्मा का दर्शन करें। जीवों पर दया करें और दीन-दुखियों की सेवा करें। मानव हित से जुड़े कारों में खुद को लगाएं। वही जीवन का सबसे बड़ा धन है। इंसान आज धन की चाह में मां-बाप, भाई और अन्य नाते रिश्तेदारों को भूलता जा रहा है। क्षणिक सुख के लिए वह नास्तिक बन रहा है। वह यह नहीं सोच रहा है कि जीवन का आनंद धन में नहीं, मां-बाप की सेवा में है। इस धरती पर मां-बाप साकार भगवान हैं। यह बात तब समझ में आती है, जब इंसान खुद बूढ़ा होता है। उसे तब अपनी गलती का अहसास होता है। तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। इसलिए कहा गया है बोए पेड बबूल का तो आम कहां से पाया।

मई में खुलेंगे बद्रीनाथ धाम के कपाट

दुनिया

में हिंदुओं के तीर्थ भगवान विष्णु के बैकुंठ धाम बद्रीनाथ मंदिर के ग्रीष्मकाल के दौरान कपाट खोले जाने की तिथि की घोषणा कर दी गयी है। कपाट खोलने की तिथि के घोषणा के साथ ही बद्रीनाथ की पूजा की प्रक्रिया शुरू हो गई। बद्रीनाथ मंदिर के कपाट मई माह के प्रथम पर्वताङ्कोड़े में खुलेंगे। बद्रीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति के अध्यक्ष अनुसूयाप्रसाद भट्ट ने बताया कि मंदिर नौ मई को प्रातःसाढ़े पांच बजे खोले जाएंगे। पिछले दिनों टिहरी के राजदरबार के पुरोहितों, मंदिर समिति के सदस्यों और अन्य लोगों की उपस्थिति में बसंत पंचमी के दिन बद्रीनाथ के कपाट खोलने की तिथि तय की गई। उन्होंने बताया कि ग्रीष्मकाल में भगवान की पूजा के दौरान परेपरागत ढंग से उनके विग्रह पर तिल का तेल लगाने और अखंड दीपक जलाने के लिए तेल पेरेकरउसे रखने वाले बर्तन गाढ़ घड़ी को भी आज राजदरबार को सौंप दिया गया। भट्ट ने बताया कि उत्तरखण्ड के चमोली जिले के मुख्यालय गोपेश्वर से करीब 90 किलोमीटर दूर



दस हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित बद्री विशाल मंदिर में पूजा की प्रक्रिया आज से ही शुरू कर दी गई है। भट्ट ने बताया कि परंपरा और आस्था के अनुसार भगवान के विग्रह पर पूरे छह महीने तक जिस तिल के तेल को लगाया जाता है और उसका अखंड दीपक जलाया जाता है, उसे तैयार करने के लिए उत्तरखण्ड के ही पूर्व टिहरी राज्य के राजघराने की महिलाएं बड़ी ही पवित्रता से राजमहल के अंदर बने कोल्हू से तिल का तेल निकालती हैं और उसे पूरे विधि विधान के साथ बद्रीनाथ को रखाना किया जाता है। उन्होंने बताया कि बद्रीनाथ के गर्भगृह में मुख्य पुजारी गवलजी के मदद के लिए सहायक पुजारी डिमरी के गांव डिमरसे उस बर्तन गाढ़ घड़ीको बड़ी ही पवित्रता से लाया जाता है और इसी में तिल पेरेकर निकाले गए तेल को रखा जाता है। भट्ट ने बताया कि रानियों द्वारा तेल पेरेका काम शुरू कर दिया गया है और उस गाढ़ घड़ी को आगामी 27 अप्रैल को टिहरी से बद्रीनाथ के लिए पूरे समारोह के साथ रवाना किया जाएगा।

इस पखवाड़े के पर्व त्यौहार व्रत एवं पर्व

1 मार्च- हेरथ, हरराति (जम्मू-कश्मीर में शिवत्रिंश) 2 मार्च- प्रदोष व्रत, महाशिवरात्रि व्रत, गौरी-शंकर विवाहसंस्कार, श्रीवैद्यनाथ जयंती, कृतिवासेश्वर-दर्शन (काशी), द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन-पूजन, श्रीमहाकालेश्वर नवरात्रि पूर्ण (उज्जित्री), स्वामी दयानंद बोधोस्त्व, आर्य समाज समाज प्रारम्भ, संत गाड़ी महाराज जयंती (ज्ञक समाज), लोधेश्वर दिवस (लोधी समाज), मेला नीलकंठ (गढ़वाल) 3 मार्च- शिव चतुर्दशी व्रत (वैष्णव), पुरु-प्राप्ति हेतु पोक्रत 12 दिन, 4 मार्च- स्नान-दान-श्राद्ध को फालुनी अमरपाल, शिव खप्पर पूजा, वटुक परमामूर्त (जम्मू-कश्मीर), पार्श्वक प्रतिक्रिया (शेत्र जैन), 5 मार्च- जनकपुर-परिक्रमा प्रारम्भ (मिथिला), पुरु-प्राप्ति हेतु पोक्रत 12 दिन, 6 मार्च- संत वीन-चंद्र-दर्शन, पूजेगा दूज, श्रीरामकृष्ण परमस्त जयंती, वैधुति प्रसापत दिन 2.06 से सार्व 7.02 तक, 7 मार्च- गोविंदवलभ पंत समीन दिवस, 8 मार्च वरदविनायक चतुर्थी व्रत, आंगाको चतुर्थी, पं. लोधराम जयंती, अतंराशीय महिला दिवस, 9 मार्च- संत चतुर्थी (उडीसा), आर्य समाज समाप्त, 10 मार्च- याज्वलक्ष्मी जयंती, स्कन्द (कुमार) पांची व्रत, 11 मार्च- गोरुपणी पांची (बंगाल), आर्यां सुंदर साहब पुण्यतिथि (सञ्जिदानद सम्प्रदाय), अड्डुं प्रारम्भ (शेत्र जैन), 12 मार्च- होलकांक शुरू (होलकांक दहन से 8 दिन पूर्व), अड्डुं प्रारम्भ (दिंग जैन), रोहिणी व्रत (जैन), 13 मार्च- श्रीदुणिष्ठी व्रत, श्रीअन्नपूर्णा व्रत, तैलाश्मी एवं थाल भरण (जम्मू-कश्मीर), संत ददूदयाल जयंती, 14 मार्च- आनन्द नवमी, ब्रज में होली शुरू, लड्डू बांसी (बरसाना, मुगुरा), मीन-संक्रान्ति शेषवार्षीय दिवस 4.32 बजे, पुष्ट दरामी आगामी दिन, सोंथ, थालस-सूखु मुहुर्न (जम्मू-कश्मीर), 15 मार्च- फां दरामी (उडीसा), लड्डू बांसी (नन्दावाल, मथुरा), त्रिविद्वायी मेला खट्टूशमाजी प्रारम्भ (राजस्थान), मीन-संक्रान्ति के सान-दान का पुष्टकल सूर्योदय से प्रातः 10.56 बजे



अपने हक्क के बारे में कितनी जागरूक हैं स्त्रियां

हाल ही में केन्द्र सरकार ने महिलाओं को घेरेलू हिंसा से बचाने के लिए एक नया कानून बनाया है जिससे महिलाओं की स्थिति मजबूत हुई है। ऐसे महिलाओं को कई बार ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिनके संदर्भ में वे कानून की मदद ले सकती हैं। पर कानूनी मदद पाने के लिए यह जरूरी है कि उन्हें अपने कानूनी अधिकारों की ठीक-ठीक जानकारी हो। आइए जानते हैं महिलाओं की समस्याओं और उनसे जुड़े कानूनी पक्षों के बारे में कुछ जानकारी यहां दी जा रही है। जैसे यदि आप 18 वर्ष की हो गई हैं तो आपको यह अधिकार मिल जाता है कि जिससे चाहे विवाह कर सकती हैं। इसमें मां-बाप तथा संवधियों को हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। लड़कियों के लिए यह महत्वपूर्ण मुद्दा होता है कि क्या वह शादी के बाद अपने

पति का उपनाम अपनाने के लिए बाध्य है? यद्यपि भारत में यह परम्परा है कि शादी के बाद लड़की के पहले नाम के साथ उसके पति का नाम तथा उपनाम जुड़ जाता है और वह इसी नाम से जानी जाती है। लेकिन यदि लड़की शादी के बाद अपना पहले का परिचय नहीं बदलना चाहती तो कानूनन वह अपना पुराना नाम और पदवी रख सकती है। बहुत सी कामकाजी महिलाएं अपने नाम से ही जानी जाती हैं। वे अपनी निजी पहचान बनाए रखना चाहती हैं। इस तरह शादी के बाद यदि कोई लड़की अपने पति का नाम तथा उपनाम अपने नाम के साथ नहीं लगाना चाहती तो उसे यह अधिकार है कि वह अपने पुराने नाम से ही जानी जाए। ऐसी परिस्थिति में लड़की को शादी के बाद एक एफिडेविट देना होता है कि उसकी शादी फलां व्यक्ति से हुई है तथा शादी के बाद वह अपना पुराना नाम ही कायम रखना चाहती है। शादी के बाद लड़की को एक और महत्वपूर्ण अधिकार मिलता है वह यह कि जो भी गहने तथा पैसे वह अपने मां-बाप या समुराल पक्ष से पाती है, उस पर उसका स्वयं का अधिकार होता है। इस बात के लिए वह बाध्य नहीं है कि तलाक की स्थिति में यह धन वह अपने पति या सास-समुर अथवा मां-बाप को वापस करे। लड़की का अन्य अधिकार यह है कि यदि उसके पति की मौत हो जाती है या उसका तलाक हो जाता है तो वह बच्चे का संरक्षक बनने का दावा कर सकती है। अभी तक औरतों को बच्चों का संरक्षक बनने का अधिकार नहीं मिला था। लेकिन अब यह अधिकार उन्हें मिल गया है। यदि पति बच्चे को प्राप्त करने के लिए कोर्ट में पती से पहले अपनी याचिका दायर करता है तो भी पती को दावा करने और बच्चे को प्राप्त करने का अधिकार है। औरतों को मिला यह एक महत्वपूर्ण अधिकार है। यदि औरत अपने पति या समुरालवालों के द्वारा प्रताड़ित की जाती है तो उसे भारतीय दंड संहिता के तहत उनके खिलाफ आपराधिक रिपोर्ट लिखाने का अधिकार है।



महिला बॉस गरिमा बनाएं रखें



38 प्रतिशत लोगों ने महिला बॉस के साथ काम नहीं किया है। 18 प्रतिशत लोगों का मानना है कि बॉस चाहे महिला हो या पुरुष, काम तो काम है। क्या फर्क पड़ता है, करना है तो करना है। महिलाओं को महिला बॉस के अंदर काम करना क्यों अच्छा नहीं लगता है।

महिला

बॉस की छवि आज भी न जाने व्यापार महिलाएं तो उस से खाए रहती हैं। उनका बस चले तो वे उस के साथ काम ही न करें। लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है। कामकाजी महिलाओं के यदि पुरुष बॉस होते हैं तो महिलाएं उन्हें उतना बुगा नहीं कहतीं, जिनमा कि वे महिला बॉस को कहती हैं। महिला बॉस उन्हें हमेशा अपना दुश्मन ही नजर आती है। एक सर्वे से पता चला है कि 44 प्रतिशत लोग पुरुष बॉस के साथ काम करना पसंद करते हैं। 38 प्रतिशत लोगों ने महिला बॉस के साथ काम नहीं किया है। 18 प्रतिशत लोगों का मानना है कि बॉस चाहे महिला हो या पुरुष, काम तो काम है। क्या फर्क पड़ता है, करना है तो करना है। महिलाओं को महिला बॉस के अंदर काम करना क्यों अच्छा नहीं लगता है। इस पर वे कहती हैं, महिला बॉस को अपनी तारीफ सुनने की आदत होती है। अपने को स्मार्ट दिखाने के लिए वह हमारी छोटी-छोटी गलतियों को भी बढ़ा बताती हैं, जबकि पुरुष बॉस को कोई गलती दिखाती है तो वह उसे समझा कर बात खत्म कर देता है। पुरुष बॉस में अमूमन अहं नहीं होता। जलन व बदला लेने जैसी भावना भी नहीं होती। सर्वे रिपोर्ट या फिर आम लोगों की राय को देखते हुए महिला बॉस के प्रति धारणा चाहे जो भी हो, लेकिन महिला बास का पद अपने आप में प्रतिष्ठित पद है। इसलिए अपने पद की गरिमा बनाए रखने के लिए महिला बॉस इन बातों का जब तक जरूरी न हो अपने अधीनस्थ कर्मचारी से अपना पर्सनल काम न करवाएं। बगाबर दर्जे के पद वाले पुरुष अधिकारी को अपने से कम न समझें। यदि कोई छोटे दर्जे के अधिकारी हैं वे वे आप से उम्र में बड़े हैं तो उनसे आदर से बात करें। उम्र से बड़े अधीनस्थ कर्मचारी के लिए भी आदरसूचक शब्द का प्रयोग करें। किसी भी अधीनस्थ कर्मचारी से अभद्रता से पेश न आएं, अपना व्यवहार संतुलित रखें। अधीनस्थ कर्मचारी कभी छुट्टी मांगता है और संभव हो तो अवश्य दें। आफिस में हमेशा शालीन परिधान पहनें। मेकअप व आधूषण भी सौंध्य ही हों। बॉस हैं तो बॉस की तरह रहें। अधिक चंचलता या तेज आवाज में बात न करें और न ही किसी को डांट लगाएं। हमेशा च्यूड़िगंग या इलायची वागैरह न चबाती रहें। फोन पर न तो जोर से और न ही देर तक बातें करें। इस तरह आप थोड़ी सी कोशिश कर के अपने पद की गरिमा को बनाए रख सकती हैं और फिर ऐसी महिला बॉस के साथ क्या पुरुष क्या महिला, सभी काम करना चाहेंगे। चूंकि महिला बॉस इमोशनल होती है, इसलिए सामने वाले के इमोशन को अच्छी तरह समझ लेती है। बॉस की जिम्मेदारी को संभालते हुए महिला बॉस घर को भी अच्छी तरह चला लेती है।

एनआरआई दूल्हों की ज्यादतियों की शिकार भारतीय लड़कियों की तादाद लगातार बढ़ती जा रही है। पिछले छह महीने में 360 युवतियां राशीय महिला आयोग के पास पहुंची हैं, जो एनआरआई या प्रवासी भारतीय पतियों या उनके परिवार वालों के हाथों सताइ गई थीं। 2009 में राशीय महिला आयोग के तहत बना एनआरआई सेल अब ऐसी महिलाओं के लिए एक मददगार मंच के रूप में सामने आ रहा है। इस मामले में विदेश मंत्रालय और प्रवासी भारतीय मामलों के मंत्रालय भी मिलकर काम करने की योजना बना रहे हैं।

एनआरआई शादियों से जुड़े मुद्दों पर एक नैशनल सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न मंत्रालयों के साथ-साथ विभिन्न राज्यों के महिला आयोग, स्वयंसेवी संगठन, गृह मंत्रालय के अधिकारी और पीड़ित महिलाओं ने भाग लिया। सरकार की योजना है कि किसी भी भारतीय लड़की की शादी चाहे एनआरआई, प्रवासी भारतीय या विदेशी से भारत या भारत से बाहर क्यों न हुई हो, उसके साथ शादी के बाद किसी भी तरह की दिक्कत आने पर उसकी मदद की जाएगी।

इन मामलों में पति व परिवारवालों की ज्यादती, पत्नी को बेसहारा छोड़ देना, मारपीट, सारीकी शोषण, उत्तीर्ण, दहेज प्रताड़िना, झूठ बोलकर शादी करना, पासपोर्ट व अन्य कानूनी कागजों को जब्त करना, बच्चे की कस्टडी जैसी शिकायतें सामने आ रही हैं। सेमिनार में मांग उठी कि ऐसे मामले न सिर्फ भारतीय अदालतों, बल्कि फास्ट ट्रैक परिवारिक अदालतों में चलाएं जाएं। विभिन्न देशों में स्थित दूतावासों में हेल्पलाइन या हॉटलाइन शुरू करना चाहिए। विभिन्न देशों के साथ होने वाली प्रत्यर्पण संघियों में घेरेलू अनबन को शामिल किया जाए।



माधुरी, मलाइका को नोटिस जारी

पाकिस्तानी गायक राहत फतेह अली खान से कनेक्शन को लेकर डियरेक्टरेट ऑफ रेवेन्यू इंटेलीजेंस (डीआरआई) ने मलाइका अरोड़ा और माधुरी दीक्षित को नोटिस जारी किया है। दोनों को जल्द ही पूछताछ के लिए बुलाया जा सकता है। गौरतलब है कि डीआरआई ने राहत के एजेंट चित्रेश श्रीवास्तव के ठिकानों पर छाप मारा था, यद्युं से चित्रेश की एक डायरी भी जब्त की गई थी, जिसमें माधुरी, मलाइका और पांप गायक मीका सिंह के नाम का भी जित्रा है। डायरी में माधुरी और मलाइका को 30-30 लाख की पेमेंट दिए जाने की बात लिखी गई है। डीआरआई की टीम इस बात की जांच करेगी की ये रकम इन्हे कब और किस सिलसिले में दी गई। डीआरआई के इन कलाकारों को नोटिस के बाद बॉलीवुड में हड्डकंप मच गया है। वहाँ डीआरआई ने इस मामले में एक बार फिर से राहत से करीब 11 घंटे पूछताछ की।



बॉलीवुड में करीब एक दशक तक एक-दूसरे का साथ निभाने वाले जॉन अब्राहम और बिपाशा बसु अब अलग हो चुके हैं। खबर है कि दोनों के बिचारों में काफी मतभेद हैं और इस बजह से वे अलग हुए हैं। बिपाशा शादी करना चाहती है, लेकिन जॉन अभी इसके लिए तैयार नहीं हैं। फिल्मी दुनिया से जुड़े हाँ व्यक्ति की जुबां पर उनके अलगाव की चर्चा है। यद्यपि इससे पहले भी दोनों के बिच में दरार की चर्चा थी। मार इस बार यह खबर काफी पुख्ता बताई जा रही है। लोग तो यह भी कह रहे हैं कि दोनों ने एक-दूसरे से बोर होकर अलग होने का फैसला किया है। उनसे जुड़े करीबी सूत्रों का कहना है कि हाल ही में बॉलीवुड के एक समारोह में दोनों साथ दिखे थे, लेकिन सचाई यह है कि अब वे एक युगल की तरह नहीं रहते। जॉन से पहले बिपाशा का अफेयर अभिनेता डीपो मोरिया के साथ भी था। उनसे अलग होने के बाद उन्होंने जॉन का दामन थामा, लेकिन अब उनका साथ भी छूट गया। खबर है कि अलग होने की पहल बिपाशा की ओर से हुई है। बॉलीवुड के गलियारों में इसकी चर्चा काफी पहले से चल रही है, क्योंकि दोनों ने पार्टियों में साथ जान बंद कर दिया है। बॉलीवुड की इस सबसे हॉट जोड़ी जॉन अब्राहम और बिपाशा बसु के बिच में दरार आ गई है। बताया जा रहा है कि बॉलीवुड में शादियों की लंबी लिस्ट को देखने के बाद बिपाशा का भी मन दुल्हन बनने का हो रहा है। बिपाशा से जुड़े लोगों का कहना है कि उन्होंने अपने बॉयफ्रेंड जॉन अब्राहम पर शादी का दबाव बनाना शुरू कर दिया है, लेकिन जॉन थोड़ा समय और चाहते हैं। लिहाजा इस बात को लेकर दोनों में अनबन हो गई है। इसके बाद से दोनों ने साथ-साथ सार्वजनिक समारोहों में जाना बंद कर दिया है। जॉन के करीबी दोस्त का कहना है कि पहले जॉन हर समय बिपाशा के बारे में ही बात किया करते थे। लेकिन अब ऐसा नहीं है। उन्होंने बिप्स के बारे में पूरी तरह बात करना बंद कर दिया है। गौरतलब है कि बिपाशा का करियर इस समय डांबाडोल हो गया है। उनकी पास कोई खास फिल्में भी नहीं हैं और बॉक्स ऑफिस पर उनकी पहले जैसी डिमांड भी नहीं रही।

बिपाशा ने कहा शादी, जॉन बोले नहीं



रणबीर ने कैटरीना को किया हवा में किस

बॉलीवुड के लव बड़स रणबीर कपूर और कैटरीना कैफ भले ही अपने प्यार को छिपाने की लाख कोशिश करें, लेकिन दोनों कहीं न कहीं पकड़े ही जाते हैं। इस बार उन्हें हवाई जहाज में चुंबन लेते पकड़ा गया है। यह खूबसूरत घटना पिछले रविवार की रात को फेंकफर्ट से मुंबई आ रही उड़ान के दौरान हुई। मुंबई के एफएम रेडियो बन की होस्ट मालिनी अग्रवाल ने अपने ब्लॉग पर इसका उल्लेख किया है। मालिनी के अनुसार, हवाई जहाज में फर्स्ट क्लास केबिन में रणबीर-कैट की कतार में बैठीं उनकी दोस्त ने यह नज़र अपनी आंखों से देखा। दोनों एक-दूसरे की बांहों में सिमटकर चुंबन ले रहे थे। चरमदीद के मुताबिक केबिन में अधिकतर यूरोप के बिजनेसमैन थे। उनमें से शायद ही कोई दोनों को पहचानता हो। जींस-टीशर्ट पहनी कट्रीना मेंकअप के बिना थीं। उन्होंने चारों तरफ देखा कि कोई भारतीय चेहरा उन्हें देख तो नहीं रहा। निश्चित होने के बाद वह रणबीर के साथ आराम से बैठ गई। देखते ही देखते रणबीर उनके गालों पर किस करने लगा। कैट ने भी कोई एजराज नहीं जाताया। इस दौरान दोनों कोई स्क्रिप्ट भी पढ़ने लगे। फिर रणबीर ने एयरहोस्टेस से कंबल भी मांगा, जबकि दोनों में से कोई सोने के मूड में नहीं दिख रहा था। आठ घंटे के सफर में दोनों के बीच काफी नज़दीकियां देखी गईं। सूत्रों का कहना है कि रणबीर एक विज्ञापन की शूटिंग के सिलसिले में नीदरलैंड्स की राजधानी एम्स्टर्डम में थे। जबकि कट्रीना उनके साथ प्यार के क्षण बिताने के लिए आई थीं। वैसे कैट के लिए इससे अच्छा मौका और कोई हो भी नहीं सकता, क्योंकि सलमान खान भी शूटिंग के सिलसिले में 50 दिन के लिए थाइलैंड में हैं।

प्रियंका को भारी पड़ा महिला का किरदार निभाना

बॉलीवुड फिल्मों में मुख्य भूमिका निभाने वाली अभिनेत्रियों के लिए पांदे पर उम्रदराज दिखने का चलन अब तक तो नहीं रहा लेकिन 7 खून माफ में इस चुनौती को कबूल करने वाली प्रियंका चोपड़ा की मानें तो 65 साल की महिला का किरदार अदा करना वाकई काफी मुश्किल था। सिनेमाघरों में प्रदर्शन को तैयार 7 खून माफ में 28 साल की प्रियंका 65 साल की उम्रदराज महिला सुजारा का किरदार अदा कर रही हैं। मशहूर उपन्यासकार रसिकन बांड की लघुकथा पर आधारित इस फिल्म में सुजना एक-एक कर अपने सातों शौहरों का कल्पन कर देती है। 7 खून माफ में प्रियंका उम्र में 20-30 साल की महिला की भूमिका में भी हैं और बाद में 65 साल तक की उम्र वाली महिला के तौर पर भी नज़र आती हैं। अधेड़ उम्र की महिला का किरदार अदा करने की बाबत प्रियंका कहती है कि विशाल भारद्वाज निर्देशित इस फिल्म में उन्होंने अपनी भूमिका में जान डालने के लिए कड़ी मेहनत और पूरी कोशिश की है।

कुदरत बचाओ कारियर बनाओ

पर्यावरण सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन को लेकर जागरूकता बढ़ रही है। कुदरत को बचाने की इस मुहिम के परिणामस्वरूप ग्रीन जॉब्स का एक बड़ा मार्केट खड़ा हो रहा है, जहाँ पे-पैकेज भी अच्छा है। क्या हैं ग्रीन जॉब्स और कैसे पा सकते हैं आप यहाँ एटी, बता रही हैं, शाश्त्री।

एक जमाना था जब छात्रों की प्राथमिकता की सूची में सबसे अंत में आता था पर्यावरण विज्ञान यानी इनवायरनमेंटल साइंस। लेकिन अब इस सूची में यह ऊपर की ओर कदम बढ़ा रहा है। जलवायु परिवर्तन और उससे होने वाले खतरों के विषय में लगातार बढ़ रही जागरूकता और पर्यावरण को बचाने के लिए विश्व के विभिन्न हिस्सों में चल रहे आंदोलनों के कारण अब छात्रों के बीच विषय के रूप में पर्यावरण विज्ञान की लोकप्रियता बढ़ने लगी है। पर्यावरण विज्ञान के प्रति छात्रों की बढ़ रही सुचि का एक कारण यह भी है कि अब पर्यावरण से जुड़े फील्ड में नौकरी की संभावना भी काफ़ी तेजी से बढ़ रही है। पर्यावरण के क्षेत्र से जुड़ी इन नौकरियों को ग्रीन जॉब्स का नाम दिया गया है।

कितनी तेजी से बढ़ रही है, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सितंबर, 2009 में दिल्ली में देश के पहले ग्रीन जॉब्स फेयर का आयोजन किया गया था। इस नौकरी मेले में देश-विदेश की 25 से ज्यादा कंपनियों ने भाग लिया था।

क्या है ग्रीन जॉब्स

आखिर ग्रीन जॉब्स हैं क्या और ग्रीन जॉब्स की श्रेणी में कौन-सी नौकरियों को रखा गया है? पर्यावरण सुरक्षा के क्षेत्र में काम करने वाली मुंबई स्थित एनजीओ दी क्लाइमेट प्रोजेक्ट इंडिया के डायरेक्टर गौरव गुप्ता के अनुसार, ग्रीन जॉब्स, कार्य की ऐसी विधियाँ हैं, जहाँ पर्यावरण की सुरक्षा का ध्यान में रखते हुए वस्तुओं का उत्पादन और उसका उपयोग किया जाता है। बिजली की बचत और सौर तथा पवन ऊर्जा आदि अधिक-से अधिक इस्तेमाल करने वाली बिल्डिंग का निर्माण करने वाला आर्किटेक्ट, वॉटर रीसाइक्ल सिस्टम लगाने वाला प्लंबर, विभिन्न कंपनियों में पर्यावरण के संरक्षण से संबंधित शोध कार्य और सलाह देने वाले

लोग, ऊर्जा की खपत कम करने की दिशा में काम करने वाले विशेषज्ञ, परिस्थिति की तंत्र व जैव विविधत को कायम करने के गुर सिखाने वाले विशेषज्ञ, प्रदूषण की मात्रा और ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के तरीके बताने वाले एक्सपर्ट आदि के काम ग्रीन जॉब्स की श्रेणी में आते हैं।' विशेषज्ञों की मानें तो आने वाले वक्त में हर नौकरी में यह क्षमता होगी कि वह ग्रीन जॉब्स में तबदील हो सके। इस सेक्टर में धीरे-धीरे विस्तार हो रहा है और साथ ही साथ नौकरी की संभावनाएँ भी बढ़ रही हैं। यह सेक्टर प्रशिक्षित लोगों की मांग करता है और बदले में अच्छी सैलरी देता है। कई विशेषज्ञों की यह भी राय है कि जिस तरह सूचना और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में एक जमाने में भारी उछल आया था, वैसा ही आने वाले वक्त में ग्रीन जॉब्स के क्षेत्र में होगा। भारत तेजी से शहरीकरण की ओर बढ़ रहा है। हमारे यहाँ नए भवनों का निर्माण हो रहा है और ऊर्जा की मांग भी बढ़ रही है। आनेवाले समय में पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में नियम-कायदे और भी स्पष्ट व कड़े होंगे और पर्यावरण

सुरक्षा के साथ-साथ विकास के फॉर्मूले को हर जगह मान्यता मिलेगी। अन्य क्षेत्रों के अलावा कृषि के क्षेत्र में भी भारतीय और विदेशी कंपनियां भारत में रिसर्च और डेवलपमेंट सेंटर की स्थापना कर रही हैं। कृषि उत्पादन बढ़ाने और परिस्थितिकी तंत्र को कम-से-कम नुकसान पहुंचाने की दिशा में लगातार शोध कार्य और निवेश हो रहे हैं। हर साल सिर्फ इन मांगों को पूरा करने के लिए 5000 प्रशिक्षित लोगों की जरूरत होगी। आनेवाले समय में देश के सभी छह लाख गांवों को पानी और कचरा प्रबंधक की जरूरत होगी और इस जरूरत को पूरा करने के लिए 1.2 करोड़ प्रशिक्षित लोगों की जरूरत होगी। आप अगर ग्रीन जॉब्स कर रहे हैं, तो इसका मतलब यह है कि आप नौकरी के साथ बाहरवाली की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले छात्र ग्रेजुएशन के स्तर पर इनवायरनमेंटल साइंस में पोस्ट ग्रेजुएशन करना बेहतर होगा।

कैसे करें शुरुआत

सर्वोच्च न्यायालय के दिशा-निर्देश के आधार पर यूजीसी ने ग्रेजुएशन के स्तर पर इनवायरनमेंटल स्टडीज को अनिवार्य बना



इन दिनों ज्यादातर युवाओं के लिए मीडिया आकर्षक करियर बनता जा रहा है। यदि लिखने-पढ़ने के शौकीन हैं और आपकी कम्युनिकेशन स्किल बढ़िया है, तो मीडिया आपके लिए बेस्ट करियर साबित हो सकता है। दरअसल, आज मीडिया का काफ़ी विस्तार हो चुका है। न केवल अखबार, टीवी और रेडियो, बल्कि इंटरनेट, मैजीस, फिल्म भी इसके विस्तारित क्षेत्र हैं। करेंट इवेंट्स, ट्रेंड्स संबंधित इन्फोर्मेशन कलेक्ट करना, एनालाइज करना आदि जर्नलिस्ट के मुख्य काम हैं।

ज्यादातर इंस्टीट्यूट्स एंड्रेस एजाम आयोजित करते हैं। इसमें रिटेन टेस्ट, इंटरव्यू और ग्रुप डिस्कशन भी होता है। लिखित परीक्षा में स्टूडेंट्स के राइटिंग स्किल्स, जेनरल अवेयरनेस, एनालिटिक एविलिटी और एस्टीटीयूड की जांच की जाती है। एमसीआरसी के ऑफिशिएटिंग डायरेक्टर ओबेद सिद्दीकी के अनुसार, एंड्रेस एजाम के लिए कार्ड विशेष तैयारी नहीं करनी होती है। टेस्ट के माध्यम से एप्लीकेंट के सोशल, कल्चरल और पॉलिटिकल इश्यू संबंधित ज्ञान को परखा

जाता है। करेंट अफेयर्स की जानकारी एशियन कॉलेज ऑफ जर्नलिज्म के प्रोफेसर संपत्त कुमार कहते हैं कि जर्नलिज्म के लिए जरूरी तत्व हैं- करेंट न्यूज पर आपकी पकड़। ऐसे कैंडिडेट ही अच्छे जर्नलिस्ट बनते हैं, जिन्हें न्यूज की अच्छी समझ होती है और जिनकी राइटिंग स्किल बढ़िया होती है। साथ ही, उनका अपने पेशे के प्रति कमिटमेंट होना भी जरूरी है। दरअसल, किसी भी खबर का विश्लेषण कर उसे सरल रूप में पेश करना ही मास कम्युनिकेशन का मुख्य उद्देश्य होता है। यदि आप इस पेशे में सफल होना चाहते हैं, तो

न्यूजपेपर्स, मैजीस और करेंट अफेयर्स संबंधित बुक्स जरूर पढ़ें। इंटरव्यू है असली परीक्षा दिल्ली यूनिवर्सिटी से जर्नलिज्म में बैचलर करने के बाद मैं पीजी करना चाहता था। मैं प्रतिदिन एंड्रेस एजाम की तैयारी के लिए दो लीडिंग न्यूजपेपर्स और कई मैजीस पढ़ा करता था। एंड्रेस एजाम राइटिंग स्किल्स और सामिक्षण घटनाओं के प्रति आपकी जागरूकता की जांच के लिए किए जाते हैं। इसमें सफल होना आसान है। असली परीक्षा इंटरव्यूज के दौरान होती है। इस दौरान आपकी न्यूज सेंस, कम्युनिकेशन स्किल और पेशेंस की भी जांच-परख होती है। यदि

क्या हैं ग्रीन जॉब्स और कैसे पा सकते हैं आप यहाँ एंट्री, बता रही हैं, शाश्त्री। एक जमाना था जब छात्रों की प्राथमिकता की सूची में सबसे अंत में आता था पर्यावरण विज्ञान यानी इनवायरनमेंटल साइंस। लेकिन अब इस सूची में यह ऊपर की ओर कदम बढ़ा रहा है। जलवायु परिवर्तन और उससे होने वाले खतरों के विषय में लगातार बढ़ रही जागरूकता और पार्यावरण को बचाने के लिए विश्व के विभिन्न हिस्सों में चल रहे आंदोलनों के कारण अब छात्रों के बीच विषय के रूप में पर्यावरण विज्ञान की लोकप्रियता बढ़ने लगी है।

खोजी दिमाग के लिए जर्नलिज्म बेस्ट करियर

आप दब्बे किस्म के इंसान हैं या जल्दी अपना धैर्य खो देते हैं, तो आपको इस क्षेत्र में सफलता नहीं मिल सकती। इसलिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति स्पष्ट नजरिया बनाना होगा कि आपका स्वभाव इस पेशे के अनुकूल है या नहीं।

खोजी दिमाग के लिए जर्नलिज्म बेस्ट करियर इन दिनों ज्यादातर युवाओं के लिए मीडिया आकर्षक करियर बनता जा रहा है। यदि लिखने-पढ़ने के शौकीन हैं और आपकी कम्युनिकेशन स्किल बढ़िया है, तो मीडिया आपके लिए बेस्ट करियर साबित हो सकता है।

मेनन ने बताया आरोपों को सत्य से परे

- बनारस की महिला ने लगाया था यौन शोषण का आरोप
- पुलिस में जाने की बजाय राष्ट्रीय अध्यक्ष से की शिकायत
- विरोधियों का दाव उल्टा पड़ा

आशीष नक्सवाल / न्यूज ट्रैक नेटवर्क

भोपाल। मध्यप्रदेश भारतीय जनता पार्टी की आपसी कलह के चलते भाजपा के नवनियुक्त संगठन महामंत्री अरविंद मेनन पर बनारस की एक महिला ने यौन शोषण के आरोप लगाए हैं। संगठन महामंत्री की पदस्थापना को लेकर चल रही आपसी कलह के दौरान शिकायतकर्ता ने पुलिस में जाने की बजाय भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित कई आला नेताओं से इस मामले की शिकायत करते हुए पुलिस में रिपोर्ट करने की अनुमति मांगी थी जिसके बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष ने पीड़ित महिला को पुलिस में रिपोर्ट करने की सलाह देने के बजाय अरविंद मेनन को संगठन महामंत्री के पद पर नियुक्त कर दिया। जिसके चलते विरोधियों का दाव उल्टे उनके गले ही पड़ गया।

बताया जा रहा है कि बनारस की इस महिला द्वारा तैयार करवाया गया शपथ पत्र मध्यप्रदेश में ही बनवाया गया था। गैरतलब है कि विगत लंबे समय से मध्यप्रदेश में संगठन महामंत्री के पद पर पदस्थ माखन सिंह को बदले जाने की कवायद राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और भारतीय जनता पार्टी के आला नेताओं के बीच चल रही थी। इस पद के प्रमुख दावेदार सह-संगठन मंत्री भावत शरण माथुर और अरविंद मेनन थे।

बनारस की महिला ने आरोप लगाया है कि उसके पिता और अरविंद मेनन का परिचय था। महिला के पिता अस्वस्थ चल रहे थे और इसी दौरान मेनन ने भावात्मक लगाव दिखाकर एवं काशी विश्वनाथ के मंदिर में विवाह का बाद करके पांच वर्षों तक उसका दैहिक शोषण किया। महिला इस दौरान 15 बार जबलपुर और 2 बार भोपाल भी आई।

महिला ने आरोप लगाया है कि विगत 5 वर्षों में वह 4 बार गर्भवती हुई और चारों बार अरविंद मेनन ने उसका गर्भपाता जबलपुर में करवा दिया। अवैध

संबंध स्थापित करने के दौरान मेनन ने उक्त महिला को 40 लाख का एक फ्लैट

बनारस में खरीद कर दिया था। जब उक्त महिला के पिता की मृत्यु हो गई तो मेनन ने शादी से इंकार कर दिया और वह मकान खाली भी करवा लिया। उक्त महिला को मेनन ने यह ज्ञासा भी दिया था कि वह उहें गिफ्ट में एक फार्म हाऊस भी देंगे। उक्त महिला ने मेनन पर जबलपुर में 2 और भोपाल में 1 एक अन्य महिला से संबंध बनाने का आरोप भी लगाया है। आरोपों में महिला ने मेनन को अपील खाने का आदी भी बताया है। उक्त महिला ने यह आरोप मेनन की नियुक्ति के पूर्व लगाए थे। शिकायती शपथ पत्र राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर-संघचालक मोहन भावत, संघ सह-कार्यालयक सुरेश सोनी, लोकासभा में नेता प्रतिपक्ष सुषमा स्वराज, भाजपा के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री रामलाल, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष प्रभात ज्ञा, पूर्व संगठन महामंत्री माखन सिंह एवं सह-संगठन मंत्री भावत शरण माथुर सहित पुलिस महानिदेशक को भी यह पत्र भेजा था।

मेनन का कहना है

जब इन आरोपों को लेकर भाजपा के संगठन महामंत्री अरविंद मेनन से चर्चा की गई तो उनका कहना था मैं कुछ भी नहीं कहना चाहता, मैं कहूँ यह सत्य से परे हूँ। जब उनसे यह पूछा गया कि अगर यह आरोप गलत हैं तो क्या इस मामले की शिकायत आपने पुलिस को की है तो उन्होंने कुछ भी कहने से इंकार कर दिया।

सरकार की दृष्टि अब दलितों पर

भाजपा का खेल...

ब्यूरो / न्यूज ट्रैक नेटवर्क

भोपाल। प्रदेश भाजपा ने आदिवासियों के बाद अब प्रदेश दलितों के बोट बैंक को साधने की तैयारी की है। प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस महासचिव दिविजय सिंह के नक्शेकदम पर चलते हुए प्रदेश भाजपा और उसकी सरकार के मुख्यालय शिवराज सिंह चौहान ने मिशन 2013 को ध्यान में रखते हुए अभी से सभी वर्ग खासकर दलित वर्ग को साधना शुरू कर दिया है। दिविजयसिंह ने

भी कभी दलितों के बोट बैंक को मजबूत करने के लिए दलित ऐंजेंडा तैयार किया था। यह अलग बात है कि दिविजय सिंह का दलित कार्ड 2003 में कोई खास असर नहीं दिखा पाया। अब उन्होंने के नक्शे कदम पर चलते हुए शिवराजसिंह चौहान ने भी बोट की खातिर दलित वर्ग को आकर्षित करने का प्रयास शुरू कर दिया है। जिस तरह से मंडला में आदिवासी समाज किया उसी तर्ज पर शिवराज ने सागर में अनुसूचित जाति वर्ग का

महासम्मेलन आयोजित करने की बात कही है। मुख्यमंत्री ने ऐलान किया है कि अगले साल 2012 में सागर जिले में अनुचित जाति वर्ग का महा सम्मेलन आयोजित किया जायेगा। इस तरह भाजपा ने अगले विधानसभा चुनाव 2013 की तैयारी अभी से शुरू कर दी है। भाजपा जातिगत राजनीति को बढ़ावा दे रही है। उसका ध्येय तीसरी बार सत्ता पाना है। इसके लिए महासम्मेलनों के नाम पर बोट बैंक पक्का किया जा रहा है या यह कहे सम्मोहित किया जा रहा है। हालांकि यह अलग बात है कि प्रदेश में सभसे अधिक दलित और आदिवासी वर्ग ही शोषण का शिकार हो रहा है। इस संबंध में कभी भाजपा ने इससे पहले मंडला में आदिवासी महासम्मेलन किया था, जिस पर करोड़ों रुपए फूंके गए। इस सम्मेलन की खिलाफ बोट बैंक से नहीं हर दल ने की थी। देश भर में भाजपा का यह महासम्मेलन खास सुरिखियों में रहा था। अब एक बार फिर भाजपा इस तरह के एक और

महासम्मेलन की तैयारी में अभी से जुट गई है।

मुख्यमंत्री ने पिछ्ले दिनों संत रविदास महाराज के जन्मोत्सव समारोह में दलित वर्ग के लोगों को आकर्षित करने के लिए कई घोषणाएं की थी। मुख्यमंत्री ने इस दौरान उनकी सरकार द्वारा दलितों के उत्थान के लिए किए जा रहे कार्यों का भी जमकर गुणान किया। यही नहीं योजनाओं का लाभ उठाने की अपील भी की। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि प्रदेश में जितने अनुचित जाति वर्ग के लोग निवास करते हैं उस क्षेत्र में उतनी ही संख्या का प्रतिशत बजट इस वर्ग के उत्थान के लिए सुरक्षित रखा जाएगा। यही बात मुख्यमंत्री गवर्नर के साथ उज्जैन के रविदास जयंती महाकुंभ के दौरान बयां करते हैं कि चर्म विकास निगम का नाम संत रविदास शिल्प विकास निगम रखने की कार्यवाही की जा रही है। संत रविदास स्मारक हेतु 50 लाख रुपए स्वीकृत किए गए हैं और अगले माह से स्मारक का कार्य प्रारंभ हो जाना चाहिए।

